पद भाग क्र.८

२९ :– ध्रिग ध्रिगता को अंग
३० :– प्रश्न उत्तर को अंग
३१ :– कर्मी नर को अंग
३२ :– सेन को अंग
३३ :– बिन त्यागी को अंग
३४ :– ममता को अंग
३५ :– कलयुग निषेध को अंग
३६ :– त्यागी फकिरी के लक्षण को अंग
३७ :– निच जाती निषेध को अंग
३८ :– अंतकाल की विधी का अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

२९

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	ध्रिग ध्रिग सो नर नार क्वायी १११	१
२	संतो इन मन कूं क्या कीजे ३५८	१

३०

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	घट मांहि साहेब बसे हो १२५	३
२	हर को सोझो या तन मांही १४४	४
३	जंवरो सोज कहो घट मां ही १६८	५
४	जी गुराँ भेद बताव ज्यो १७२	५
५	खण्ड पिण्ड की गत अेक है २०१	६
६	कोन शब्द से कोन होय २०७	७
७	मै देता हुँ हेला जुग के माय २१३	८
८	ने:हचल को रंग डोल कहुँ हो २५१	९
९	राजा अेसा भेष हमारा २९२	९

३१

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	साधो भाई करडु प्रतन सिजे ३१३	१२

३२

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बिण धावण लाहो जे गाळे ८७	१२
२	संतो बाद करे झूठा ३३९	१३
३	संतो राम उथापे झूठा ३६८	१४

३३

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	साधो भाई तन धर त्यागी नाहि ३१७	१६
२	त्यागी ओ तुं भेद बिचारे ४०७	१८

३४

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अेसा जुग मे को नही २२	१९
२	वा कल तो पावे नही ४१७	२०

३५

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	कळ जुग पूरण जोय १९१	२१
२	संतो सुणो भेष भूलो जाय ३७१	२३
३	सुणज्यो बाबा कळजुग बरत्यो आय ३८७	२४
४	सुणो सिष असा कळ जुग आसी ३९२	२५

३६

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	जुग माही सोई फकीर बखाण १८४	२७
२	साधो भाई त्याग दिया हम सोई ३२०	२७

३७

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बाँभीडा खीज कांय दुख पायो १ २८	२९
२	बाँभीडा खीज कांय दुख पायो २ २९	२९

३८

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	आन ध्रम दिन चार ०४	३०
२	चालोनी रे हंसा ९१	३१
३	धर मानव अवतार ९९	३४
४	धिन्न धिन्न सो हंस भाग १०३	३५
५	धिन धिन सो हंस जीव १०४	३६
६	जाग जाग घर जाग १६०	३७
७	संतो भाई सुणज्यो भेद बिचारा ३४८	३९
८	सुच्च धरणी अप सुच्च ३८१	४०
९	सुणज्यो सब नर नार ३८८	४१

१११

|| पदराग बसन्त ||

धिग धिग सो नर नार क्कायी

धिग धिग सो नर नार क्कायी || हर पंथ छाड़ जम गेल जोय || टेर ||

जो रामजी के देश जाने का रास्ता छोड्कर काल के रास्तें से चलता है उस नर–नारी को धिक्कार है,धिक्कार है। ||टेर||

जन संग छाड ठग संग कीन || लाडूज तज मुख भिष्ट लीन ||

नर अमर बेल कूं खिणे आय || जळ तुस बेल कूं पावे हे जाय || १ ||

जन याने साहुकार की संगत छोड्ता और ठगो की संगत करता,लाड्डू,बर्फी का भोजन त्यागता है और बुध्दी भ्रष्ट करनेवाली मांस,मच्छी भक्षण करता है। अमरजडी को खोदकर फेक देता और जहरिली जडीयों को जा जाकर पानी देता है ऐसे ही ये मुर्ख लोक रामजी के देश पहुँचानेवाली रामजी की भक्ति त्यागते और भेरु,भोपा,मोगा,पित्तर आदियों की काल के देश ले जानेवाली भक्ति तथा,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की काल के देश में रखनेवाली भक्ति हर्ष करके धारण करते। ||१||

प्रण्यो पीव पर हऱ्यो संग || निच यार संग रची रंग ||

गज से उत्तर चड्यो खर आय || इमरत छाड बिषे मथ खाय || २ ||

विवाहबध्द हुआ पती त्यागते और व्यभिचारी पुरुष का संग करते और रचमच के रंगते और हाथी से उतरते और गधे पर स्वार होते, रामनाम अमृत त्यागते और विषयरस मथ–मथकर पिते। ऐसे ही भक्ति करनेवाले रामजी की भक्ति त्यागते और रामजी छोड अन्य देवताओंकी भक्ति दौड दौड कर करते। ||२||

सांच छाड गहे झूठ कोय || धन गाँठ भव ज्या हो रहे सोय ||

जन केत देव सुखदेव आण || फिट शुभ छाड गहे असुभ जाण || ३ ||

संतों का सतज्ञान त्यागते और काल के लोक में पहुँचानेवाली देवी–देवताओंकी खोटी भक्ति धारण करते। जेब में धन है और जहाँ चोरो का भय है वहाँ बेधड्क गहरी निंद लेता है मतलब तन में अमोलक साँस है और जहाँ काल का भय है ऐसे मोह,ममता के गहरे निंद में सोता है याने रामजी के देश पहुँचानेवाला रामनाम लेने का शुभ रास्ता त्यागता है और काल के देश पहुँचानेवाला अन्य देवताओंका नाम जपता ऐसा अशुभ रास्ता धारण करता है ऐसे सभी नर–नारी को धिक्कार है,धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ||३||

३५८

|| पदराग बिहगडो ||

संतो इण मन कूं क्या कीजे

इम्रत नाव छोड दे दूष्टी || बिषे करम सूं रीजे ||टेर||

जीव के साथ मन यह विकारी माया आदि अनादी से ही है। यह मन जीव के साथ बाद में कभी जुडा होगा यह सोचना झूठा है। यह मन पाँच विषयों के सुखों में लिन रहता। मन के इस प्रकृती के कारण जीव नरक तथा चौरासी लाख योनि में जा पड्ता फिर भी मन विषय वासना में पूर्ण लिपटा रहता और जीव को भी दु:ख भोगवाते रहता। ऐसे मन से छुटकारा पाने के लिए जिन जिन संतों ने मन मारा ऐसे संतों से जीव पूछता है की,इस दुष्ट मन का मैं क्या करु?यह आदि अनादि से मेरे साथ है। वह मेरे से अलग भी नहीं होता और मैं मेरे बल से उसे अलग भी नहीं कर पाता। यह मेरा मन इतना दुष्ट है की जिस अमृत रुपी नाम से मेरा नरककुंड छुट सकता वह नाम त्याग देता और जिस विषय वासनाओंके कर्मोसे अति दु:खो के नरककुंड में जा पड्ता ऐसे विषय वासनाओंके कर्मो को खुश होकर जा–जा कर चिपकता। ।।टेर।।

हे सो काम करे नही कोई ।। नही हे तांसूं झूंबे ।।
ध्रिग ध्रिग मन बुध बिहुणा ।। आन झूट सूं लूंबे ।।१।।

नरककुंड में न पड्ने का कारज तो करता नहीं याने अमृत रुपी नाम तो लेता नहीं और नरक कुंड में पड्नेवाले विषय कर्मो से जा–जाकर झुंबता। इस कारण ऐसे मेरे मन को धिक्कार है,धिक्कार है। यह मेरा मन,बुध्दि हिन है। अमृत नाम याने परमात्मा का नाम त्यागकर जिससे विषय कर्म झोंबते ऐसे अन्य झूठे भेरु,भोपा,मोगा,पितर,सितला,दुर्गा,पीर, क्षेत्रपाल,गोगा आदि देवतासे झोंबता। ।।१।।

अलवी जीभ झके दिन राती ।। नेण पाप दिस जोवे ।।
मात पिता सुत नार कुलंतर ।। धन काजे नित रोवे ।।२।।

यह मन साहेब ने फुकट में दिए हुए जीभ से रात–दिन विषय विकारोकी बातें बकता। ऐसेही साहेब ने दिए हुए नयनो को विषय पापो की ओर घेरता। यह मेरा मन साहेब छोड्कर माता,पिता,पुत्र,पत्नी तथा परिवार साथ न चलनेवाले इस झुठी माया के लिए और धन के लिए नित्य रोता। ।।२।।

लालच लोभ क्रम के काजा ।। नित मन पंथ धावे ।।
हर की भक्त जन की मन मे ।। सपने हुं नहि लावे ।।३।।

यह मेरा मन जिससे नरक में जाना पडेगा ऐसे लालच,लोभ के विकारी कर्म नित्य जोर लगा के करता। यह मन कर्म के एवं लालच तथा लोभ के रास्ते पर नित्य दौड रहा है परंतु जिससे नरक सदा के लिए छुटेगा ऐसी हर की भक्ति याने राम–भक्ति करने का और रामजी के जनो की संगती की बाते मन में सपने में भी नजदीक नहीं लाता है। ।।३।।

ज्या सूं जाय नर्क मे पडीये ।। सो बिध हरखर धारे ।।
तां पद सूं मत मोख मिलीजे ।। वां कूं नाय संभारे ।।४।।

जिस जिस विधियोंसे जीव नरक में जाकर गिरेगा,वह सारी विधियाँ हर्षायमान होकर खुशी

से धारन करता और जिस जिस विधियोंसे नरक सदा के लिए छुटेगा ऐसे मोक्ष पद की विधि नहीं संभालता। ।।४।।

हा हा हार चल्यो इण मन सूं ।। मेरे हात न आवे ।।
के सुखराम मोख पद छाडर ।। नरक कुंड दिस धावे ।।५।।

ऐसे मेरे दुष्ट मन से मैं बार–बार हार जा रहा हूँ। मेरे सभी प्रयासो के बावजुद यह मन मेरे हाथ नहीं आता। यह मेरा दुष्ट मन महासुख का मोक्ष पद छोड्कर महादु:ख के नरककुंड के ओर दौड करता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

१२५

|| पदराग धमाल ||

घट मांहि साहेब बसे हो
घट मांहि साहेब बसे हो ।। तम सुणज्यो सब जन लोय ।। टेर ।।

जो जो ब्रम्हंड में है वह सभी पिंड में याने घट में है। ऐसेही साहेब ब्रम्हंड में है तो घट में भी है यह तुम सभी संतो और लोग सुनो। ।।टेर।।

बंदो कहावे सो मन जाणो ।। निजमन करता होय ।।
रमता राम तिको इण घट मे ।। सोऊँ सांस कूं जोय ।। १ ।।

इस शरीर में बंदा कौन है?पूछोगे तो बंदा मन है और कर्ता कौन है,कहोगे तो,यह निजमन यही कर्ता है। जो कुछ भी करता है,वह निजमन ही करता रहता है। सभी कर्मो का कर्ता,निजमन ही है और रमता राम इस शरीर में,सर्वत्र रमण कर रहा है और सोहं यह साँस है,उसे देखो। पूरक करते समय सो और रेचक करते समय हम,उच्चारण होता है,वह देख लो। ।।१।।

अंजण होय तके तत्त इंद्रियाँ ।। सोऊँ निरंजण जाण ।।
ररंकार धुन पारब्रम्ह हे ।। अवगत अनाद बखाण ।। २ ।।

ब्रम्हंड में पाँच तत्व आकाश वायू अग्नि जल पृथ्वी हैं तो शरीर में कान,चमडी,आँख, जीभ,नाक यह इंद्रिये है,ब्रम्हंड में निरंजन है तो घट में सोहम यह निरंजन हैं,ब्रम्हंड में पारब्रम्ह है तो घट में ररंकार हैं,ब्रम्हंड में अविगत याने अनाद यह पारब्रम्ह है तो घट में ररंकार धुन यह पारब्रम्ह हैं। ।। २ ।।

ररंकरधुन अनाद शब्द सुर जिंग हे ।। अे सुण ग्रभ न जाय ।।
अजरावण सो अमर पुरष हे ।। सो घट धुन कहाय ।। ३ ।।

अनाद शब्द की जिंग शब्द का स्वर,यही ध्वनि अनादी है। अनाद शब्द और जिंग शब्द गर्भ में नहीं आता है और अजरावण जो जरता नहीं है याने गलता नहीं है,वह अमर पुरुष है। वह घट में याने शरीर में ध्वनि के रुप मे समझता। ब्रम्हंड में अनाद यह अजरावण अमर पुरुष है तो घट में जिंग ध्वनि है। अनाद यह जीवब्रम्ह के समान गर्भ में नहीं आता। ।।३।।

हद सो नाभ नास का बीचे ।। बेहद त्रिगुटी पार ।।
तीन लोक अे सीस नाभ हे ।। पग सो पाव बिचार ।। ४ ।।

नाभी और नाक इनके बीच में हद है याने ३ लोक १४ भवन है और बेहद याने ३ ब्रम्ह के १३ लोक यह त्रिगुटी के परे है। जैसे ब्रम्हंड में स्वर्गलोक,मृत्युलोक,पाताललोक है वैसे बंकनाल से लेकर सिरतक स्वर्ग लोक है। नाभी में मृत्युलोक है पैर के तले तक पाताल लोक है। ।।४।।

पाँचू तत्त इन्द्रियाँ काय ।। नारायण जिंग राम ।।
ओ सुण भेद लखेगा घट मे ।। ताका सझे सब काम ।। ५ ।।

आकाश,वायु,अग्नि,जल,पृथ्वी से पाँच तत्व और शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन इंद्रियों की काया एक ही है और घट में का नारायण याने हंस और जींग राम एक ही है। ऐसे ब्रम्हंड और पिंड एक ही है ऐसा समझकर ब्रम्हंड में जैसा अविगत है वैसे घट में अविगत है यह जिसे ज्ञान होगा उसीका सब काम सजेगा। ।।५।।

खंड पिंड का निरणा सब सुणज्यो ।। हे अेसी बिध मांय ।।
क्हे सुखराम अवगत हर चहिये ।। तो सतगुरू कीज्यो आय ।। ६ ।।

इस खण्ड का और पिण्ड का निर्णय सभी सुनो,यह ऐसी विधी शरीर के अन्दर ही है यह समझो। आदि सतगुरु सुखरामजी महराज कहते है कि,यदी तुम्हें अविगत याने रामजी से मिलने की गरज है तो आकर मुझे सतगुरु धारण करो। ।।६।।

१४४

।। पदराग धमाल ।।

हर को सोझो या तन मांही

हर को सोझो या तन मांही ।। खंड पिंड की बिध अेक हे हो ।। टेर ।।

हर को इसी पिंड में खोजो। पिंड और खंड ब्रम्हंड की बनावट एक सरीखी है। ।।टेर।।

बंदो कवन कवन सो करता ।। कवन राम सो क्राय ।।
अवगत किसा कहो इण घट मे ।। सो मुझ देवो बताय ।। १ ।।

शरीर में बंदा कौन है?शरीर में कर्ता कौन है?शरीर के अंदर तीन राम कौन है?और शरीर में अविगत कौन है?यह मुझे बताओ। ।।१।।

अंजन कवन निरंजन कोहे ।। पारब्रम्ह कहो मोय ।।
आवागवन ग्रभ नहि आवे ।। तिन को काहा घट होय ।। २ ।।

शरीर में अंजन याने इंद्रियेवाले देव कौन है?निरंजन पारब्रम्ह कौन है?और आवागमन में, गर्भ में नहीं आता वह निरंजन सतस्वरुप घट में कहाँ रहता?।।२।।

बेहद किसी हद सो क्या हे ।। तीन लोक कहो जाण ।।
पाचूँ तत्त छटां नारायण ।। सोज पिंड कोहो आण ।। ३ ।।

इस शरीर में बेहद कहाँ है?हद कहाँ है?इस शरीर में तीनो लोक खोजकर बताओ। ये

शरीर में पाँच तत्व तथा छठवाँ नारायण कहाँ है?वह खोजकर बताओ। ।।३।।

खण्ड पिण्ड को निरणो कीजे ।। कोहो ठाकुर कुण होय ।।
कहे सुखराम ग्यान बिन सुळज्या ।। राम न पायो कोय ।। ४ ।।

खंड में जो जो जहाँ जहाँ है वह पिंड में कहाँ है यह निर्णय करो। इस घट में ठाकूर कौन है?यह बताओ। यह ज्ञान का खुलासा जिसे नहीं आता उसने राम पाया नहीं यह समझो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

१६८

।। पदराग धमाल ।।

जंवरो सोज कहो घट मांही

जंवरो सोज कहो घट मांही ।। खण्ड पिंड की गत्त अेक हे हो ।। टेर ।।

खंड पिंड की गती एक है,तो जैसे खंड में जंवरा जम है तो घट में जंवरा कौन है?यह खोजकर बताओ। ।।टेर।।

कहो कोण काल कोण जम कहिये ।। कहो कुण मारण हार ।।
घट मे ही जीव सीव सो को हे ।। सो मुझ कहो बिचार ।। १ ।।

घट में काल कौन है?जम कौन है?मारनेवाला कौन है?घट में जीव कौन है?शिव कौन है?इसका मुझे विचार बताओ। ।।१।।

कर्मी कवन कवन सो धर्मी ।। कवन साहा कुण चोर ।।
कहो कुण सुख दु:ख घट पावे ।। सुरग नरक कहां ठोर ।। २ ।।

घट में कर्म करनेवाला कौन है?धर्म करनेवाला कौन है?साहुकार कौन है?और चोर कौन है?घट में सुख और दु:ख कौन पाता?घट में स्वर्ग और नरक किस ठिकाण पर है?यह बताओ। ।।२।।

घट मे पीर तिथंकर को हे ।। को अवतार कवाय ।।
सुर नर देव जगत सो दाणो ।। को हरी सम्रथ माय ।। ३ ।।

घट में पीर कौन है?तिर्थंकर कौन है?घट में अवतार कौन है?घट में नर कौन है?देव कौन है?दानव कौन है?तथा समर्थ हरी कौन है?यह बताओ। ।।३।।

अेक नावसो कहो को तनमें ।। बोलत कहो कुण जाण ।।
के सुखराम घटे बदे को हे ।। अचल कवण घट आण ।। ४ ।।

तन में एक नाम कौन है?घट में बोलता कौन?आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,घट में घटता कौन और बढता कौन?घट में अचल कौन है?यह बताओ। ।।४।।

१७२

।। पदराग जोगारंभी ।।

जी गुराँ भेद बताव ज्यो

जी गुराँ भेद बताव ज्यो ।। किस बिध मिलसी जी राम ।।
मोख मुक्त पर्लोक को ।। किस बिध परसूं म्हे धाम ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मुझे यह भेद दिखाओ की,किस विधी से रामजी मिलेंगे। मोक्ष क्या है?मुक्ति क्या है?और परलोक क्या है?यह सभी मुझे बताओ ?और उस धाम को,मैं किस विधी से जाकर पहुँचुंगा?(इसका मुझे भेद दिखाओ?)।टेर।

जिण जिण बिध हर पावीया ।। सो मुज कहो सब आप ।।
सोई सोई बिध सब धार सूं ।। जप सूं अे निस जाप ।। १ ।।

(पहले के हो गये,जिन-जिन संतों को),जिस-जिस विधी से हर(रामजी)मिले हो। वह सभी विधी मुझे बताओ?तुम बताओगे,वह सभी विधी मैं धारण करुँगा, तुम बताओगे उस नाम का जप मैं करुँगा । ।। १ ।।

चीर फाड कंथा करूं ।। पेरूं इण गळ माय ।।
ग्रह तज बन सब ढूंढ सूं ।। जे हर मिलसी आय ।। २ ।।

तुम बताओगे तो,मैं अपना कपडा फाडकर,(कंथा)करके,इसे मेरे गले में डालूँगा। और घर बार छोडकर,सभी बनो में खोजूँगा। यदी मुझे हर आकर मिलेंगे,तो आप जैसे बताएँगे,उसी तरह करेंगे। ।। २ ।।

केवो तो ओ जुग कुळ छोड दूँ ।। तन मन करूं कुर्बाण ।।
काट काट तन चाड दूं ।। जे हर मिले मुज आण ।। ३ ।।

तुम कहोगे तो,यह जग और कुल छोड दूँगा। तन और मन की कुर्बानी करुँगा। यह शरीर तुम कहोगे तो,काट काट कर चढा दूँगा। मुझे यदी हर मिलेंगे तो,ये सभी विधी करने को,मैं तैयार हूँ। ।। ३ ।।

गुफा अे खोद भूमे रहूं ।। कहो तो पाड्रां बिच ।।
कवो तो जळ मे डूब रूँ ।। क्हो तो घर गांरे कीच ।। ४ ।।

तुम कहोगे तो,गुफा खोदकर,जमीन में रहने को तैयार हूँ। तुम कहोगे तो,पहाड पर जाकर रहने को जाता हूँ। तुम कहोगे तो पानी में डूबकर रहूँगा,तुम कहोगे तो,घर रुपी(कीचड)में रहूँगा। ।।४।।

जन सुखदेव गुरू यूं कहे ।। सुण तूं सिष सूजाण ।।
हर पावे नर साच सूं ।। दूजी लिव सूं जाण ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हे सुजाण शिष्य,तुम सुनो,हर(रामजी) सतगुरु का विश्वास रखने से मिलते है और दूसरा लिव(भजन की नाद)लगाने से मिलेंगे। ।। ५ ।।

२०१

।। पदराग धमाल ।।

खण्ड पिण्ड की गत अेक है

खण्ड पिण्ड की गत अेक है ।। तन खोजो हरिजन संतो आँण ।।टेर।।

पिंड की और खंड ब्रम्हंड की गती एक है यह सभी संतो,सभी हरीजन तन में खोजो

||टेर||

काल क्रोध करम सुण जम है || अहुं मारण हार ||
घट में जीव ईन्द्रियां कहिये || सोहंग शीव विचार ||१||

खंड ब्रम्हंड के यमपुरी में जम है,तो घट में क्रोध और अहंकार ये जम है। खंड में जीव है तो देह में इन्द्रियाँ यह जीव है। खंड ब्रम्हंड में पारब्रम्ह शिव है तो घट में साँस यह शिव है। ||१||

करमी मन चोर ही मन || है ओही साहूकार ||
इन्द्रियां मन सुख दुख पावे || भ्रगुटी सुरग विचार ||२||

खंड मे चोर है तो घट में विषय वासनिक मन ही चोर है। खंड में साहुकार है तो घट में दयालू मन ही साहुकार है। खंड में स्वर्ग है तो घट में भृगुटी याने स्पर्श का सुख स्वर्ग है। इस स्पर्श इंद्रियाँ से मन स्वर्ग के समान सुख पाता। खंड में नरक है तो घट में ही नरक है। यह मन इंद्रिये सुख न मिलने पर दु:ख पाता,तड्पता तब नरक के सरीखे दु:ख पड्ते। ||२||

घट में पीर तीरथंगर मन है || सुर नर है अवतार ||
दांणू देव जगत सी होई || रमता राम विचार || ३ ||

खंड में पीर है तो घट में मन ही पीर है। खंड में तीर्थंकर है तो घट में विषय वासना से मुक्त ऐसा मन तीर्थंकर है। खंड में सुर,नर,अवतार है तो घट में मन ही सुर,नर,अवतार है। खंड में राक्षस है तो देह में मन का क्रुर स्वभाव यह राक्षस है। खंड में देव है तो देह में मन का दया स्वभाव यह देव है। खंड में रमता राम रहता तो घट में भी रमता राम रहता ऐसे खंड पिंड की गती एक है। ||३||

घटे बढे सो ही मन माया || शिव धुन घट में जाँण ||
कहे सुखराम तत्त बोहो नामा || ब्रम्ह अेक कर जाँण ||४||

जैसे खंड में घटती बढ्ती यह त्रिगुणी माया है ऐसेही घट में घटता बढता यह मन माया है और खंड में ब्रम्हंड में शिव याने पारब्रम्ह है ऐसे ही साँस ध्वनि यह घट में पारब्रम्ह है यह समझो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,तत्त याने जीव बहुत है और उनके देह अलग अलग है इसलिए जीव तत्त के देह के नाम बहुत है परंतु जैसे खंड ब्रम्हंड में सतस्वरुप ब्रम्ह एक है ऐसे ही सभी जीवतत्त में सतस्वरुप ब्रम्ह एक है उसे पहचानो और उसे प्रगट करो । ||४||

२०७

|| पदराग बसन्त ||

कोन शब्द से कोन होय

कोन शब्द से कोन होय || जन सोच सोध कोहो अरथ मोय || टेर ||

कौनसे शब्द से कौनसा शब्द उत्पन्न हुआ?यह संत जनो बिचार कर,खोजकर इसका अर्थ

मुझे बताओ। ।।टेर।।

बावन हरफ सब सोज बीर ।। कोण शब्द की कोण चीर ।।
तत्त पाँच गुण तीन जाण ।। सत्त शब्द मूल मुझ कहो आण ।। १ ।।

बावनअ क्षर,पाँच तत्व,तीन गुण,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये किस शब्द से प्रगट हुए?और सतशब्द जो सभी शब्दो का मूल शब्द है उसे खोजकर मुझे बताओ। ।।१।।

हो रंरकार में बड़ो कोण ।। सुण ओऊँ सोऊँ कहो मोय ।।
या च्यार शब्द को करो न्याव ।। कोन शब्द से कोन आय ।। २ ।।

ररंकार,ममंकार,ओअम्,सोहम् इन शब्दो में बडा कौन है?इन चार शब्दो के उत्पती का निर्णय करो। कौन किससे जन्मा?यह निर्णय करो और मुझे बताओ। ।।२।।

पाँच तत्त गुण तीन जाण ।। इण ओऊँ शब्द से बण्या आण ।।
सुण सोऊँ शब्द का हरफ सेंग ।। जे जीभ पढत मुख करे बेग ।। ३ ।।

पाँच तत्व,तीन गुण यह ओअम शब्द से जन्मे। ओंकार से महतत्व बना। महतत्व से आकाश,आकाश से वायु,वायु से अग्नि,अग्नि से जल व जल से पृथ्वी यह पाँच तत्व बने तथा महतत्व से शक्ति,शक्ति से रजोगुणी ब्रम्हा,सतोगुणी विष्णु,तमोगुणी शंकर ये तीन गुण बने। सभी बावन अक्षर सोहम याने साँस से उच्चारण किए जाते है तथा ये सभी ररंकार,ममंकार,ओअम,सोहम ये चारो शब्द जीभ और मुख से पढे जाते है। ।।३।।

च्यार हरफ को मूळ एक ।। या शीश शब्द सोइ इधक देक ।।
सुखदेव कहे सो सोध जोय ।। सुण सत्त शब्द सो अधिक होय ।। ४ ।।

इन चार शब्दो का मूल एक साँस है। वह साँस इन चारो शब्दो से अधिक है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस साँस से अधिक सतशब्द है वह मुख,जीभ से पढे नहीं जाता उसे घटमें खोजो और जानो। ।।४।।

२१३

।। पदराग धमाल ।।

मै देता हुँ हेला जुग के माय

मै देता हुँ हेला जुग के माय ।। ग्यानी हुवे सो सांभळो हो ।।टेर।।

मैं संसार में,जोर से हाँक मारकर,कह रहा हूँ,संसार के सभी ज्ञानी सुनो और मेरे प्रश्न के उत्तर दो। ।।टेर।।

कहा ब्रम्ह को घाट घूट हे ।। कंचन रूप हर होय ।।
पारब्रम्ह सुई परा ब्रम्ह हे ।। ता बिध रंग कहो मोय ।।१।।

ब्रम्ह का घाट घुट क्या है?और हर किस रुप के है?और पारब्रम्ह होनकाल के परे पराब्रम्ह सतस्वरुप है उसका रंगरुप क्या है?ज्ञानीयों यह मुझे बताओ। ।।१।।

मन को रूप जीव को कहिये ।। को तन को आकार ।।
चित्त सो सुरत कोन उर माना ।। कोन कोन की लार ।।२।।

मन का रुप बताओ। जीव का रुप बताओ। जीव के तन का आकार बताओ। चित्त का आकार बताओ और सुरत का आकार बताओ। मन,जीवतत्त,चित्त और सुरत इनमें कौन किसके आधार से है यह बताओ। ।।२।।

बोलण हार कोण बस बोले ।। चुपक किसे बस होय ।।
नव तत्त लिंग स्वरूप बतावो ।। सो जन पूरा जोय ।।३।।

बोलण हार किसके बस बोलता है?और चुपक याने चुप रहता वह किसके बससे रहता है? नवतत्त लिंग शरीर का रुप बताओ?यह जो बतायेगा वही पूरा संत है। ।।३।।

परगत घाट रूप सो कहिये ।। नेह चल डोल बताय ।।
कहे सुखराम नही जे आवे ।। तो सिख होय पूछो आय ।।४।।

प्रकृति के सभी घाट और रुप कहो। निश्चल का आकार बताओ।आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह नहीं आता हो तो मेरे शिष्य बनकर मुझे पूछो,मैं आपको बता दुँगा। ।।४।।

२५१

|| पदराग धमाल ||

नेःहचल को रंग डोल कहुँ हो

नेःहचल को रंग डोल कहुँ हो ।। तम सुणज्यो हो सब संत आय ।। टेर ।।

मेरे घट में निश्चल प्राप्त हुआ इस सुख के रंग में मैं डेल रहा हूँ यह सभी संतजन आकर सुनो। ।।टेर।।

अवगत देव निरंजन मन को ।। रूप रंग तत्त होय ।।
देहि घाट सुणो ओ कहिये ।। दिन चढे सो जोय ।। १ ।।

अविगत देव निरंजन के मन का रुप और रंग तत्त है। यह तत्त रंग हंस देही घाट से बकंनाल के रास्ते से उपर दसवेद्वार में चढता तब समझता। ।।१।।

बोले चुपक बस नेःहचल के ।। परगत चित्त रंग अेह ।।
नेहचल को तुझ डोल सुणाऊँ ।। पाँच की सब देह ।। २ ।।

जीव का बोलना,मौनी बनना यह नेःहचल के बस है। सभी जीवो के चित का रंग यह निश्चल का प्रगट रंग है और सभी पाँच तत्वो की देह उस निश्चल का आकार है। ।।२।।

नव तत्त का रंग सो नहि दीसे ।। धायो डोल बखाण ।।
के सुखराम अर्थ सो सागे ।। सुणले सिख सुजाण ।। ३ ।।

नवतत्त का रंग,रुप याने आकार दिखता नहीं। खाने के पश्चात तृप्त होने का जैसा वर्णन करता वैसा नेःहचल पाने का सतज्ञान समझना यह सुजान संत तू समझ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।।

२९२

|| पदराग मिश्रित ||

राजा अेसा भेष हमारा

राजा अेसा भेष हमारा ।।
भेदी जके भली बिध जाणे ।। क्रमी लखे न सारा ।।
राम रटे प्रमेसर प्यारा ।। रेहे क्रमा सूं न्यारा ।। टेर ।।

हे राजा,हमारा भेष ऐसा है। हे राजा,मेरे भेष को कोई केवली भेदी संत होगा वही सही तरह से समझेगा। जो कर्मी जीव है याने त्रिगुणी माया में रचामचा जीव है,वह मेरे भेष को नहीं जानेगा। हे राजा,जो रामनाम का रटन करता वही परमेश्वर याने सतस्वरुप को प्यारा लगता और वही कर्मो से याने काल से मुक्त होता। ।।टेर।।

कफनी हमे क्षमा की पेरी ।। ग्यान गुदड़ी ओड़ी ।।
चोळो अजब दया को गळ मे ।। कुबद कामनी छोड़ी ।। १ ।।

हे राजा,जैसे भेषधारी साधू गले में कफनी पहनते है,तो मैने क्षमा की कफनी पहनी है। भेषधारी साधू जैसे शरीर पर गोदडी ओढते है,तो मैंने काल के परे के सतस्वरुप ज्ञान की गोदडी ओढी है। भेषधारी साधू शरीर पर चोला रखते है तो मैंने भी जीवों को काल के मुख से निकालने का दया का अजब याने कर्मीयो को समझने के परे का चोला धारण किया है। साधू लोग अपने विवाहीत स्त्री को भक्ति में व्यत्यय लानेवाली माया समझके त्याग करते है तो मैने भक्ति में व्यत्यय लानेवाली कुबुध्दी स्त्री को सदा के लिए त्याग दिया है ऐसा मैंने अजब तरह का भेष धारण किया है। ।।१।।

रमता संग रमूं जुग माही ।। इण मन कूं सिष कीनो ।।
सत्त सब्द सो गुरू हमारा ।। तत्त तिलक सिर दीनो ।। २ ।।

जैसे भेषधारी साधू धरती पर त्रिगुणीमाया के करणी क्रियाओं में रमण करते है ऐसेही मैं भी पूरे जगत में रमण करनेवाले रामजी के साथ घट को ही ३ लोक १४ भवन बनाकर घट में ही उसके साथ रमण कर रहा हूँ। जैसे भेषधारी साधू शिष्य बनाते है तो मैंने भी मेरे मन को शिष्य बनाया है। जैसे साधू के गुरु होते है वैसे ही मेरे गुरु है। मेरा गुरु सतशब्द है। जैसे जगत मे साधू मस्तक पर केसर,गंध का तिलक लगाते है,वैसाही मैंने भी सतस्वरुप ब्रम्हतत्त का तिलक लगाया है। ।।२।।

पोथी पाट बेद सब गीता ।। अणभे रा पट खोलूँ ।।
द्वादस मंत्र गायत्री मेरे ।। सत्त सब्द मुख बोलूँ ।। ३ ।।

जगत के त्रिगुणी माया के साधू त्रिगुणी माया की पोथियाँ,चार वेद,गीता,शास्त्र का परदा खोलते है,तो मैं अनभै देश के ज्ञान का परदा खोलता हूँ। माया के साधू गायत्री का मंत्र, द्वादस मंत्र समान मंत्र मुखसे जपते है,तो मैं रामनाम इस सतशब्द का मंत्र मुखसे जपता हूँ। ।।३।।

मुद्रा कंठी पावडी अलफी ।। भेद ग्यान की पेरी ।।
सास ऊसास अजपो घट मे ।। निर्गुण माळा फेरी ।। ४ ।।

त्रिगुणी माया के साधू मुद्रा,कंठी,खडाऊँ,अलफी ऐसी वस्तुएँ तन पर पहनते है जिसकारण वे साधू करके पहचाने जाते है,तो मैंने सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान तन पर पहना हूँ जिसकारण मैं साधू पहचाने जाता हूँ। त्रिगुणीमाया के साधू जागृत अवस्था में १०८ मणीयोंकी माला हाथ से फेरते है तो मैं तन में साडे तीन करोड मणीयों की निरगुण माला साँस उसाँस अजप्पा में २४ सो घंटा फेरता हूँ। ||४||

धीरज धरण लंगोटी जर्णा || आड़ बंध मत मेरी ||
आ देहे बीण तांत सब नाड़ी || रागाँ अनहद गेरी || ५ ||

धारणा याने धीरज का याने शांती का है। लंगोटी जरणा की है याने सहनशीलता की है। महिलाओ पर नजर पड्ने पर मत में कुबुध्दी आ सकती है इसलिए महिलाए तथा स्वयंम् के बीच में आड्बंध रखते है और बैरागी मत बना रखते है परंतु मेरा मत ही आड्बंध है उसे पर स्त्री कुबुध्दी सुचती ही नहीं। साधू लोग विणा रखते है,तो मेरा देह यही मेरी विणा है। साधू के विणा को बजाने के लिए तार रहते है,तो मेरे देह की सभी नाड्याँ ये तार बनी है। साधू विणा के तारों का उपयोग करके अलग-अलग राग-रागिणियाँ अलापते है तो इन राग-रागिणियोंसे अलग ऐसी अनहद शब्द की राग मेरी नाडी-नाडी गाती है। ||५||

गिगन मंडळ मे मंडी हमारी || त्रुगुटी सेवा पूजा ||
सत्त का सब्द जोत के आगे || ओर देव नही दूजा || ६ ||

साधू की जैसे पहाडी पर रहने की मढी रहती है वैसी मेरे देह के गिगन मंड्ल में मेरी रहने की मढी है। साधू का सेवा पूजा का देवरा रहता है वैसा मेरा त्रिगुटी में सेवा पूजा का देवरा है। साधू के देवरा में माया के अनेक देवताओं की मूर्तियाँ रहती है तो मेरे देवरा में माया के परे का सतशब्द यह देवता है और मेरे देवरा में प्रलय में जानेवाला कोई देवता नहीं है। साधू की सेवा पूजा की पहुँच जादा में जादा ज्योती लोकतक पहुँचती है,तो मेरी सतशब्द की भक्ति ज्योती लोक के आगे दसवेद्वार पहुँचती है। ||६||

अळा पिंगळा करे आरती || अनहद झालर बाजे ||
चित्त मन सुरत हजूरी चाकर || जिंग सब्द धुन गाजे || ७ ||

साधू की महिला भक्त आरती करते है तो मेरी गंगा,यमुना,सुषमना ये आरती करते है। साधू झालर बजाते है तो मेरे घट में अनहद बज रहा है। साधूओंके हुजुरी में चाकर रहते है तो मेरे चित्त,मन,सुरत ये हजुरी में चाकर बनके रहते है। साधू शंख फूँककर गर्जना करते है तो मेरे दसवेद्वार में जिंगशब्द के ध्वनि की गर्जना चल रही है । ||७||

दे रो भेष सकळ सो माया || असत सत्त नही कोई ||
जे कोई भेष सब्द को साजे || मोख मिलेगा सोई || ८ ||

देह के उपर बनाया हुआ सभी भेष यह माया है। वह देह के साथ मिटनेवाला है। हंस को

मोक्ष देनेवाला नहीं है इसलिए हंस के लिए सत नहीं है,असत है। भेष साजे बगैर मोक्ष नहीं है। भेष साजने से ही मोक्ष है परंतु जो साधू शब्द का भेष साजेगा वही मोक्ष में जाएगा। वही काल के दु:खों से मुक्त होगा,आवागमन के चक्कर से छुटेगा। ।।८।।

के सुखराम भेष ओ मेरो ।। जे कोई संत बसावे ।।
तिनू ताप तोड़ कर हंसो ।। अमर लोक ने जावे ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज राजा को समझा रहे कि,हे राजा,जो संत मेरा भेष धारण करेगा,वही संत आधी,व्याधी,उपाधी ये तीनो ताप को तोड़कर जहाँ आधी,व्याधी, उपाधी नहीं है ऐसे कोरे महासुख के अमरलोक में जाएगा। ।।९।।

३१३

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई करड़ु प्रतन सिजे
साधो भाई करड़ु प्रतन सिजे ।।
बाळो आग पाँच दस दिन रे ।। सपनेई सळ नही भीजे ।। टेर ।।

साधो भाई,जैसे अनाज में करडू दाना रहता। उस दाने को सिझाने के लिए पाँच दस दिन भी आग एक सरीखी लगाई तो सपने मे भी जरासा भी दाना नरम नहीं होता। ।।टेर।।

ब्रसे मेह जमी गळ जावे ।। पथर नरम नही होई ।।
यूँ क्रमी के ग्यान न लागे ।। सबद भीदे नही कोई ।। १ ।।

जैसे जमीपर मेघ बरसने से जमीन नरम हो जाती परंतु पत्थर जरासा भी नरम नहीं होता। इसीप्रकार कर्मी मनुष्य को सतस्वरुप के ज्ञान के शब्द नहीं भिदते। ।।१।।

नागर बेल बाँझ सो नारी ।। फूलाँ कदे न आवे ।।
यूं मूर्ख ने क्हो ब्हो तेरो ।। भक्ति नाय संभावे ।। २ ।।

नागरबेल तथा बांझ नारी यह कभी फूल नहीं सकती इसीप्रकार मुर्ख मनुष्य को सतस्वरुप के भक्ति का कितना भी ज्ञान बताओ वह भक्ति धारण नहीं करता। ।।२।।

तस्कर चोर लबाड पूरस के ।। साच बात बिष लागे ।।
के सुखराम यूं क्रमी नर रे ।। सत्त सबद सुण भागे ।। ३ ।।

जैसे तस्कर,चोर,लबाड पुरुष को सत्य बात विष समान जहरीली लगती इसीप्रकार कर्मी नर को सतस्वरुप के महासुख की बात विष समान लगती। इसकारण कर्मी नर सतशब्द का ज्ञान सुनते ही ज्ञान सभा से उठकर भाग जाते। ।।३।।

८७

।। पदराग बिहगडो ।।

बिण धावण लोहा जे गाळे
बिण धावण लोहा जे गाळे ।। बिन पोया व्हे रोटी ।।
तो आ मुगत सेन सूं होवे ।। बिन वाढया व्हे छोटी ।।१।।

लोहार की भाथी की हकीकत में न चलाते मन से ही चलाकर लोहा गाळ देते तो उससे

लोहा नहीं गलता वैसेही रोटी बेले बगैर मन से ही रोटी बेल लिए और रोटी बन गई ऐसा समझ लिया तो रोटी नहीं बनती,वैसे ही लकडे काटे बिना मन से काट लिए और छोटे हो गए यह समझने से छोटे नहीं होते इसीप्रकार सतस्वरुप की परममुक्ति मन से भजन कर लिए और मुक्ति हो गयी ऐसा समझने से मुक्ति नहीं होती। ।।१।।

कूवो खिण्याँ बिना जळ काढे ।। बिन चडिया फळ तोडे ।।
तो आ मुगत सेन सूं होई ।। फोज लड्या बिन मोडे ।।२।।

कुआँ खोदा नहीं और मनसे ही कुआँ खोद लिया और जल निकाल लिया समझने से जल नहीं निकलता वैसेही पेड पर चढकर फल तोडे नहीं और मनसे ही पेड पर चढ गए और फल तोड दिया समझने से फल नहीं टुटते वैसे ही शत्रु की लढाई करने आई हुई फौज से लढे बिना मन में ही फौज से लढकर फौज को वापिस लौटा दोगे तो फौज लौटेगी नहीं ऐसेही मन से ही भक्ति कर लिया और मेरी भक्ति पूर्ण हो गई इसकारण मेरी परममुक्ति हो गई यह समझने से मुक्ति नहीं होती। ।।२।।

काढे खील बीच मे बेता ।। तो धोरे बेल न आवे ।।
के सुखराम काज नहि सरसी ।। उलट रसातळ जावे ।।३।।

चलती हुई मोट बंद कर देनेपर मन में मोट चलाने से नाली में पानी आनेवाला नहीं ऐसे ही बिना भजन करते मन से ही भजन हो गया और मैं परममुक्ति में पहुँच गया समझने से मुक्ति पाने का कार्य पूर्ण नहीं होगा और उलटा भजन न करने से रसातल में जाकर दु:ख में पडता। ।।३।।

३३९
।। पदराग बिहगडो ।।

संतो बाद करे सो झूठा
संतो बाद करे सो झूठा ।।
वाँ घट करम धस्याहे भारी ।। समरथ साहेब रूठा ।।टेर।।

संतों जो सतगुरु से ज्ञान समझते नहीं और बिना समझे उनसे वाद विवाद करते वे झूठे है। उन वादीयों के घट में भारी कर्म याने काल घुसा है और काल मारनेवाला साहेब रुठा है। इसलिए वे सतगुरु से वाद करते है। ।।टेर।।

राम नांव शिवरण कूं पाले ।। सेन बतावे कोई ।।
गूंगो गाय रीझ जो लेवे ।। तो मुगत सेन सूं होई ।।१।।

रामनाम की जीभ से रटन करनेवालो को जीभ रटने की विधि से रोकते है और बिना जीभ के रटते मन से ही रामजी के साथ रहने को कहते। अगर गुँगा मनुष्य मन से गाना गाकर इनाम प्राप्त कर सकता है तो मन से बिना जिभ चलाये रामजी को मानकर मुक्ति हो सकती है। गुँगा इनाम नहीं प्राप्त कर सकता,तो मन से भक्ति करनेवाले मोक्ष को कैसा प्राप्त करेंगे? ।।१।।

बोल्या बिना न्याव जो चुके ।। बिन तिरिया नही लांगे ।।
तो आ मुगत सेण सुं होई ।। जे पाण पान बिन भांगे ।।२।।

तंटे का न्याव करने के लिए मुख से बोलना पड़ता, बिना मुख बोले न्याय होता है तो मन से रामनाम जानने से परममुक्ति होती है। घने नदी में यदि तिरे बिना नदी के दूजे किनारे पहुँच सकते है तो मन से रामनाम मानकर भवसागर तिरे जाएगा। यह सतस्वरुप की मुक्ति मन से सतस्वरुप को मानने से होती है तो घण न मारते पत्थर फुटने चाहिए। ।२।

झाडो दिया बिना बिष पाले ।। बिन जूंझ्याँ व्हे सूरा ।।
तो आ मुगत सेन सूं व्हेली ।। बिन मुख बाजे तूरा ।।३।।

साँप बिच्छु आदि का मंत्र झाड़ने याने बोले बिना मन ही मन बोल दिया यह समझने से साँप बिच्छु का जहर उतरता है तो परममुक्ति बिना जीभ से रटे,मन से रामजी को मान लेने से होगी। युध्द क्षेत्र में लढे बिना मन से ही रण में लढनेवाले को कोई शूरवीर कहेगा क्या?जिभ से रामनाम न रटने से,मन से ही रामजी को धारणे से परममुक्ति होती,तो मुख से सुर न निकालते बांसरी,तुतारी आदि बाजे बजने चाहिए। ।।३।।

हीरा पडया जमी के मांही ।। बिन खिणि यां कोई काढे ।।
तो आ मुगत सेन सूं होवे ।। लोह बिना बन बाढे ।।४।।

हीरे जमीन के अंदर उंडे जगह पर है। वे हीरे बिना जमीन के खोदे निकल सकते है तो सतस्वरुप की परममुक्ति जीभ से न भजन करते मन से भजन कर लिया यह मानने से होगी। बन के पेडो को लोहे के शस्त्र बिना मन से समझने से तोड़ेगा तो परममुक्ती जीभ से बिना रटने से मन से रट लिया यह समझने से होगी। ।।४।।

जब लग आग लगी हे नाही ।। तब लग फूंका दीजे ।।
के सुखराम लग्या फिर पीछे ।। होय नचीता रीजे ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अरे संतों जब तक आग पकड़ती नहीं तब तक फूँका लगाना पड़ता। एक बार आग पकड ली फिर फूँका मारने की जरुरत नहीं रहती, फूँका मारने से निश्चिंत हो जाता है उसी प्रकार जबतक रोम रोम में राम राम अखंडीत नहीं होता तब तक मुखसे धारोधार धुव्वाधार रामनाम रटना पड़ता। एक बार रोम रोम में राम राम अखंडीत प्रगटने पर राम नाम रटने की जरुरत नहीं पड़ती रामनाम रटनेसे निश्चिंत हो जाता है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

३६८

।। पदराग बिहगडो ।।

संतो राम उथापे झूठा
संतो राम उथापे झूठा ।।
शिवरण बिना काहे की सानी ।। ज्याँ हां सूं साहेब रूठा ।।टेर।।

संतों,जीभ होंठ से रामस्मरण करने की विधि उथाप देते है और बिना जीभ होंठ हिलाए

मन से रामजी की भक्ति करने का सिखाते है और स्वयम् करते है ये झूठे है। उन्हें रामजी पाने की विधि मालूम नहीं है,इनसे साहेब रुठा है। ।।टेर।।

क्हे क्हे खांड लेत हे सोई ।। मांग आग घर ल्यावे ।।
कागद मांह लिखीजे चीजा ।। बाच्या सूं सोई पावे ।।१।।

शक्कर की जरुरत है और वह शक्कर लाने दुकान पर नहीं गए और घर बैठेही शक्कर ले आए ऐसे करने से शक्कर प्राप्त नहीं होती वैसे ही पुराने जमाने मे चुल्हा जलाने के लिए अग्नि की जरुरत पड्ती थी वह अग्नि आज के सरीखी लायटर या माचिस के समान सुलगाए नहीं जाती थी। वह अग्नि जिसके घर में सुलगी रहती थी वहाँ से अपने घर माँग कर लाना पड्ता था। यह आग माँगने के लिए किसीके घर गए और माँगी नहीं और मन से ही समझ गए की अग्नि मिल गई अब घर चलो तो घर पर आने पर हाथ में आग न होने कारण चुल्हा नहीं सुलगता ऐसा ही मन से राम राम ले लिया ऐसा समझने से मोक्ष नहीं होता। घर की दुकान से लाने की वस्तुएँ कागद पर लिख ली परंतु ये वस्तुएँ दुकान से नहीं लाई और बार बार बाच ली तो वे वस्तुएँ बार-बार बाचने से घर में आएगी क्या?नहीं आएगी। जैसे ये वस्तु नहीं आती वैसे मन से रामजी गा लिया और होंठ जीभ से गाया नहीं तो रामजी घट में आएँगे क्या?नहीं आएँगे। ।।१।।

मुख सूं पढया आगियो लागे ।। लिख लिख सिला तिराई ।।
गज सुण टेर हाक सो दीनी ।। फंद काटियाँ आई ।।२।।

आग लगाना है तो मुख से आग लगाने का मंत्र पढना चाहिए बिना पढे मन से मंत्र पढ लिए यह मानने से आग नहीं लगेगी। रामचंद्रने पत्थर पर राम शब्द लिखा था,तब पत्थर तिरे। मन से ही पत्थर पर लिख दिया यह समझ रामचंद्र ने नहीं की। पत्थर तो बहुत थे, लिखने में बहुत समय लग रहा था फिर भी हर पत्थर पर रामचंद्र लिखते गया। मन से पत्थर पर लिख दिया यह कहने में होता था तो जरासे समय में पत्थर लिखने का काम हो जाता था फिर रामचंद्र ने हर पत्थर पर लिखने का काम क्यों किया?हाथी ने मुख से जोर लगाकर हर-हर बोला जब रामजी ने हाक सुनी और गज का यम का फंद काटा और उध्दार कर आगे के अगती के चौरासी लाख योनि में न भेजते स्वर्गादिक भेजा। ।२।

सब ही मांड बावना मांही ।। क्या साहब क्या माया ।।
धरिया नाव सकळ सो बंधण ।। केण सुणण कूं भाया ।।३।।

सारी सृष्टी बावन अक्षरो में ही है। वह साहेब समझो या माया समझो ये सभी बावन अक्षरो में है और जिसके-जिसके रामचंद्र समान रामनाम रखे है वे मोक्ष देने के कहने पुरते और सुनने पुरते है,उनके नाम लेनेसे हकीकत में मोक्ष नहीं मिलता। ये नाम उनके देह के नाम है । उनके घट में सत्तराम प्रगटा है इसलिए उनका नाम रामचंद्र नहीं है। अगर उनके घट में राम नहीं था और बिना सोचे समझे मन से ही उनके देह का नाम लेने से

मोक्ष मिलता था तो पहले रामचंद्र का मोक्ष बिना गुरु धारण किए होना चाहिए था। रामचंद्र को मोक्ष पाने के लिए गुरु वशिष्ठ करने पडे और उन गुरु की विधि से आती-जाती साँस में धुव्वाधार रामस्मरन करना पडा तब जाकर उन्हें मोक्ष मिला। ।।३।।

जे कोई नांव सुरत मे राखे ।। तो बावण के मांई ।।
चित मन सुरत पवन व्हे भेळा ।। तब लग वो पद नाही ।।४।।

जो कोई नाम सुरत में(जैसे ओअम सरीखे)यह भृगुटी में रखकर गाते है वह नाम बावन अक्षरो में का ही है वह नाम बावन अक्षरो के परे का नहीं है। जिस नामतक चित्त,मन, सुरत,पवन अकेले अकेले या एक साथ मिलकर भी पहुँचते है तब तक भी वह चित्त,मन, सुरत और पवन के परे का सुख का पद नहीं मिला यह समझो। ।।४।।

मन सूं नांव सुरत सुं ध्यावे ।। सो मुख क्यूं नहि कहिये ।।
परण्यां बिणा नार होय बेठी ।। पीव सुख किम लहिये ।।५।।

मन से नाम जप करते हो,सुरत से नाम जप करते हो, तो मुख से क्यों नहीं करते?जैसे पुरुष के साथ विवाह किया नहीं, वह पत्नी होकर पती के सुख के लिए बैठ गई तो पती का सुख मिलेगा क्या?वैसे ही मन से और सुरत से नाम प्रगट हो गया और मैं नाम का सुख ले रहा हूँ यह समझने से हंस को रामनाम का सुख मिलेगा क्या?यह सत्तज्ञान समझो। ।।५।।

चित मन सुरत थके अे पाचुँ ।। दसवेंद्वार समावे ।।
जां दिन शब्द बावना बारे ।। मुख बिन हरिजन गावे ।।६।।

हंस मुख से रामनाम गाकर दसवेद्वार पहुँचता और दसवेद्वार पहुँचेते ही उसका मुख रामनाम लेने में थक जाता और उसका चित,मन,सुरत और पवन आगे नहीं जाते इसप्रकार पाँचो थक जाते और दसवेद्वार में ये पाँचो समा जाते। उस दिन उसके घट में बावन अक्षरो के परे का शब्द सदा के लिए प्रगट हो जाता। उस दिन से वह हरीजन मुख से रामनाम गाने के बिना रोम-रोम से राम राम गाता। ।।६।।

बावन परे शब्द हे सोई ।। सो सोहँ हम पायो ।।
के सुखराम राम मुख रटियो ।। तब वाँ को घर आयो ।।७।।

ऐसा बावन अक्षरो के परे का जो सोहम शब्द है वह शब्द मैंने घट में पाया। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं मुख से रामनाम रटकर उस शब्द के आदघर याने दसवेद्वार के घर आया। ।।७।।

३१७

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई तन धर त्यागी नाहि
साधो भाई तन धर त्यागी नाहि ।।
जे त्यागी तो सत्त सब्द हे ।। ओर सबे ग्रह माहि ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,साधो भाई, जिसने शरीर धारण किया है,वे कोई भी त्यागी नहीं हो सकते है। साधो भाई,त्यागी तो वही साधू है जिसने घट में सतशब्द प्रगट कर होनकाल को त्यागा है बाकी सभी होनकाल के समान ग्रहस्थी है,त्रिगुणी माया के भोगी है। ।।टेर।।

तन सो धन मन सो माया ।। फिर सत्त सूं चाले ।।
मन सोभा मत निस दिन बांधे ।। अेक ग्रहे दुजी पाले ।।१।।

देह के पाँचो विषयों के त्यागी और धन के त्यागी ये स्वयम को त्यागी समझते। मन और तन को बस में रखने के लिए तन,मन को तपाते। जगत के लोग ऐसे त्यागीयों की शोभा करते इसलिए ये शोभायमान स्वभाव के कारण तन,मन को रात-दिन काबु में शक्ति से जखड्कर बांध के रखते फिर भी इनसे कोई एक बाँधे जाता तो दुजा तीन लोक में भागते फिरता। ये अस्सल त्यागी नहीं है,ये होनकाल माया के भोगी है। ।।१।।

खुद्या आण सकळ कूं घेरे ।। तिरषा निंद्रा आवे ।।
तामस कळे ग्यान अर सो राजस ।। सुपने मे जीव जावे ।।२।।

ये त्यागी रोटी का त्याग करते तो इन्हें कभी ना कभी भूख आकर घेरती और वे रोटी खा लेते। कोई प्यासे रहने का तप करते तो उन्हें प्यास सताती और कभी ना कभी पानी पी लेते। कोई रात-दिन जागने का तप करते फिर भी उन्हें कभी ना कभी निद्रा आकर सताती और निंद ले लेते। वैसे ही कुछ त्यागी क्रोध त्यागते परंतु कभी ना कभी क्रोध घेर लेता। कुछ त्यागी कलह करना त्यागते परंतु कभी कभी मन में कलह आ ही जाता। ये राजस याने स्त्री भोग त्यागते परंतु कभी ना कभी सपने में स्त्री भोग में जाते। ऐसे ये त्यागी होकर भी कभी ना कभी माया में भोग कर लेते। ।।२।।

सब आकार नेण सो देखे ।। काम नाद ज्हाँ जावे ।।
बास घ्राण गहे सब सारी ।। सुरत सिष्ट फीर आवे ।।३।।

ये त्यागी आँखों से स्त्रियों के शरीर देखते तब इनका न जानते कामनाद जागृत होता। प्राण अच्छे सुगंध का त्याग करता परंतु कभी ना कभी सुगंध फैलने पर सुगंध ले ही लेते। सुरत से स्त्री को देखना त्याग देते परंतु उनकी सुरत कभी ना कभी सृष्टि में देखे हुए स्त्री में फिर जाती। ।।३।।

मुख मे जीभ रात दिन बोले ।। नाभ कंवळ को बासी ।।
के सुखराम लोक तीनु लग ।। सबके गळ जम फासी ।।४।।

मुख में जीभ रात-दिन त्याग के विचार से बोलती परंतु बोलने में हरदम त्याग के बिचार नहीं रहते कभी ना कभी भोग के बिचार आते ही आते है। ये त्यागी साँस भृगुटी में चढा देते नाभी में साँस आया तो इंद्रीय चैतन्य होंगे और काम जागृत होगा इसलिए साँस को नाभी में आने नहीं देते परंतु कभी ना कभी इनका साँस भृगुटी से उतरकर नाभी में आता

ही आता। ऐसी इन त्यागीयों को यह माया त्यागना बहुत कठिन पड्ती फिर भी कोई त्यागी ये माया कठोरतासे त्यागता और यह माया जरासी नजदीक नहीं आने देता तो भी उसके गले की होनकाल यम की फाँसी नहीं छुटती। इसप्रकार तीनो लोकोतक यम की फाँसी पडी हुई है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अस्सल त्यागी तो जो–जो सतशब्द धारण करता और मन,पाँच आत्मा को त्यागता वही है। वही होनकाल के फाँसी से छुटता बाकी सभी त्यागी होनकाल का चारा है। ।।४।।

४०७

।। पदराग कानडा ।।

त्यागी ओ तुं भेद बिचारे

त्यागी ओ तुं भेद बिचारे ।। पीछे घेर कामना मारे ।। टेर ।।

अरे त्यागी,(त्याग करनेवाले),तू यह भेद विचार,फिर कामना को पलटकर,कामना को मारो। ।। टेर ।।

अन सा देव ताय कुं खावे ।। भिष्टा करे गुदा होय बावे ।। १ ।।

अरे,अन्न के जैसा देव(अन्न यह ब्रम्ह के बराबरी का देव है। ब्रम्ह से ही सभी भूतो की उत्पत्ती है।(अन्नाद भवती भूतानी)अन्न यही ब्रम्ह है।)ऐसे अन्न को तू खा जाता है। उस अन्न को तू विष्टा बनाकर,गुदाघाट से फेंक देता । ।। १ ।।

जळसा देव घूंट भर पीया ।। इन्द्रि नाल मूत कर दीया ।। २ ।।

और जल जैसे देव को, (जल के बिना किसी का भी, एक पल भी गुजरनेवाला नहीं) ऐसे जल देव को,तू घूँट भर कर पीता है और उस पानी का मूत्र बनाकर,इंद्रिय की नली से, बाहर निकाल फेंक दिया। ।। २ ।।

धरणी देव जमी सो माता ।। तां पर नाड़ो खोलण जाता ।। ३ ।।

यह धरणी देव है,इसे धरती माता कहते है। ऐसी धरती माता पर,तू पेशाब करता है। ।३।

धरणी माय सकळ कुं पाळे ।। तां पर पाँव धरे धर चाले ।। ४ ।।

यह धरती इसलिए सबकी माँ है कि,यह सभी का पालन पोषण करती है,पृथ्वी के बिना किसी का पालन पोषण नहीं होता है,ऐसी धरती माता पर तू पैर रखकर चलता है। ।।४।।

अन जळ आग सरस सो माया ।। तिरिया घाट पुरूष सब काया ।। ५ ।।

अन्न,जल और पानी ये सभी सरस याने तारनेवाली माया है। स्त्री का घट और पुरूष का शरीर यह दो शरीर ये सब माया है। ।। ५ ।।

अे सब त्याग दिया सो त्यागी ।। अे संग लियां पचे हे अभागी ।। ६ ।।

अरे त्यागी,जिसने ये सब त्याग दिया,वही असली त्यागी है। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी ज्ञानीयो सुनो,ये सभी साथ में लेकर(पचते)थकते है,वे अभागी (भाग्यहीन)है। ।। ६ ।।

के सुखराम सुणो सब ग्याता ।। सत्त ओ त्याग बिरम रस माता ।। ७ ।।

सच्चा तो वह त्याग है,जो सतस्वरुप ब्रम्ह रस में मस्त है,उनका ही असली त्याग है। ।७।

२२

।। पदराग बिलावल ।।

ऐसो जुग मो को नही

ऐसो जुग मो को नही ।। ममता कूं धपावे ।।
सुर नर मूनी देवता ।। उणारथ सब गावे ।।टेर।।

संसार में ऐसा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव का कोई ज्ञानी नहीं जो ममता को तृप्त करेगा। सुर,नर, ऋषीमुनी सभी देवता उस ममता की अतृप्ती गाते है।

ममता याने क्या?–हंस को आदि से तृप्त सुख,सदा के लिए,फुकट में मिलनेवाले,उब न आनेवाले,आज्ञाकारी ऐसे नए नए प्रकार के सुख चाहिए,ऐसेही गर्भ का,तन का,मन का, आ आके गिरनेवाले,बुढापे का,चौरासी लाख योनि का,चौरासी प्रकार के नरक का,अगती का ऐसे दु:ख बिल्कुल भी नहीं चाहिए ऐसी हंस को जो चाहना है उसे ममता कहते है। ।।टेर।।

पच पच मरगा मानवी ।। सुर देवत सारा ।।
राम रहिम ही पच मर्‍यां ।। इण ममतारे लारा ।।१।।

सभी मनुष्य,तैंतीस करोड देव,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि सभी देवत,राम और रहीम ये सभी अपनी ममता तृप्त करने में पचपच कर मर गए परंतु ये कोई अपनी ममता तृप्त नहीं कर सके। ।।१।।

आद भवानी भरम मे ।। दुख पावे रे भाई ।।
निराकार निरबाण ने ।। ममता ले आई ।।२।।

इच्छा आद भवानी भी ममता तृप्त करने के भ्रम में सृष्टि रचना में अटक गई और दु:ख पा रही। पारब्रम्ह निराकार निरबाण को उसकी ममता सृष्टि बनाने को ले आई। ।।२।।

साधु पिंडत सिध के ।। ममता दुं लागी ।।
पर आतम बस करे ।। दूणी होय जागी ।।३।।

साधू,पंडित,सिध्द इनमें भी ममता की आग भड्की है। दूसरे की आत्मा वश करनेवाले सिध्दाईयों मे दोहरी याने बहुत ममता जागृत हुई है। ।।३।।

निरगुण सुरगुण ग्यान हे ।। चडियाँ दोऊँ आपे ।।
केवळ बिन सुखराम क्हे ।। ममता नही धापे ।।४।।

निर्गुण और सर्गुण ये दोनो ज्ञानी ममता तृप्त करेंगे इस अहंपन के पेड्पर चढकर बैठे है परंतु ये पचपच कर थक जाएँगे फिर भी इनसे ममता तृप्त नहीं होगी। यह सर्गुण और निर्गुण के ज्ञानी इन्होंने ममता तृप्त करने के लिए हंसने पाँच आत्मा की तरह,ऐसे ही मनकी तरह काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर,अंहकार इनकी तरह सुरत तथा चित्त की तरह रहके देखा,सुखी होने का प्रयास करके देखा,वैसेही त्रिगुणी माया और होनकाल से लगा

रहा तो भी इसकी ममता तृप्त हुई नहीं। जब कैवल्य ज्ञान घट में प्रगट होता तब हंस के उर से जो सुखों की कल्पना थी उसके परे के सुख उसे मिलते ऐसा वह तृप्त होता उसकी ममता तृप्त होती फिर वह कभी अतृप्त नहीं रहती। ।।४।।

४१७

।। पदराग बिलावल ।।

वा कळ तो पावे नही

वा कळ तो पावे नही ।। जासुं ममता धापे ।।

जब लग कुळ का करम हे ।। चडया रे आपे ।। टेर ।।

जिस कला से,हिकमत से हंस की ममता तृप्त होगी वह कला प्राप्त करते नहीं और जिससे ममता और अतृप्त होगी ऐसे ब्रम्ह और माया इस कुल के कर्म करते याने ब्रम्ह और माया कुल के कर्म करके ममता मिट जाएगी इस अंहम में रहते ऐसे कर्मीयों की ममता कभी तृप्त नहीं होगी। ।।टेर।।

जोगी लागा जोग सुं ।। भोगी भोगा के तांई ।।

साधु लागा ध्यान सुं ।। रिष ममता माही ।। १ ।।

जैसे जोगी जोग से ममता तृप्त करना चाहता,भोगी पाँचो इंद्रियो के रस पी पीकर ममता तृप्त करना चाहता,साधू भृगुटी का ध्यान लगाकर ममता तृप्त करना चाहता तो ऋषीमुनी वेद पुराण की करणियाँ करके ममता तृप्त करना चाहते। इन कोई भी विधियों से ममता तृप्त होती नहीं। यह सभी विधियाँ ब्रम्ह और माया की है। ममता ब्रम्ह,माया के विधि से तृप्त होती नहीं। ममता ब्रम्ह और माया के परे के सतवैराग्य से तृप्त होती। वह कोई खोजता नहीं,धारण करता नहीं। ।।१।।

ग्यानी लागा ग्यान सुं ।। सुरता सुण वाके ताई ।।

आचारी षट करम की ।। समसेर समाई ।। २ ।।

ज्ञानी, वेद शास्त्र के ज्ञान से ममता तृप्त करने में जुटे है, तो श्रोता वेद शास्त्र का ज्ञान सुनकर वैसी करणियाँ कर ममता तृप्त करने में जुटे। जोगी,जंगम,सेवडा,संन्यासी,फकीर, ब्राम्हण ये छःआचारी छःकर्म के आचार पर ममता,से तलवार लेकर लढ रहे है। ये सभी विधियाँ ब्रम्ह,माया कुल की है। जिससे ममता तृप्त होगी ऐसी यह सत वैराग्य की विधि नहीं है। ।।२।।

रैत राज मरजाद कूं ।। खसताँ दिन जावे ।।

इखर ब्रम्ह सुं आद ले ।। अेकण मोल बिकावे ।। ३ ।।

राजा प्रजाहित का राजा बनके और प्रजा राजहित में उच्च बनने की मर्यादा बांधता। राजा, प्रजा अच्छ राजा और प्रजा बनने में झुंझते और अपने मनुष्य देह के दिन झुंझने में गमाते। दोनो से भी अच्छ राजा और अच्छी प्रजा बनने में ममता अंतिम तक तृप्त होती नहीं। इसीप्रकार से ममता के बीच ईखरब्रम्ह आदिसे इसी भावसे खपते है। ।।३।।

सागे सतगुरू पाविया || भरमणा सब खोवे ||
जब ममता सुखराम केहे || तिरपत होय सोवे || ४ ||

जब सच्चे सतगुरु मिलते है तब सभी भ्रम दूर होते है और वे ज्ञान से जोग,भोग,ध्यान, ज्ञान,आचार,राजा,प्रजा की मर्यादा ये सब कैसे कर्म है और ये कर्म ममता तृप्त करने के लिए कैसे झुठे है,भ्रम है यह हंस को समझाते और जिससे कर्म काटे जाते वह सतवैराग्य विज्ञान की कला बताते। ऐसी सतवैराग्य विज्ञान की कला जो हंस धारण करता उसकी ममता तत्काळ सहज में तृप्त होकर सो जाती याने मिट जाती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। अन्य कोई भी विधि कितने भी कष्ट दे देकर की तो भी ममता धापती नहीं। ||४||

१९१

|| पदराग मंगल ||

कळ जुग पूरण जोय

कळ जुग पूरण जोय || सूणो जब आवसी ||
बाँभन दुज कुं ब्याय || परण घर लावसी ||१||

जब ऊँच कुली ब्राम्हण निच कर्म करनेवाले स्त्री से विवाह कर घर में लाएगा तब पूर्ण कलियुग आ गया समझना। ||१||

तीरथ सेवा धाम || सबे मिट जावसी ||
जात बरण कूळ नाय || बीषे मथ खावसी ||२||

जब गंगा,जमुना,सुषमना के इन तिर्थो पर जाने से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की भक्तियाँ करनेसे और उनके धाम पधारने से पुण्य प्राप्त होता यह भाव पूरा मिट जाएगा तब कलियुग पूर्ण आया यह समझना। संसार में जाती,वर्ण और कुल ये कुछ भी नहीं रहेंगे। ऊँच कर्म,ऊँच जाती की स्त्री निच कर्मी निच जाती के पुरुष के साथ विषय वासना भोगेगी तब पूर्ण कलियुग आया यह समझना। ||२||

बेटी मते बर सोज || के लगन ली खावसी ||
नर पत भिक्षा लाट || खजाने लावसी ||३||

कन्या अपने मन और मत से वर खोजकर स्वयम् की शादी करेंगी और राजा भिक्षुकों के कमाई में हिस्सा रखेगा और वह भिक्षासे मिला हुआ धन अपने खजाने में डालेगा ऐसा समय जब आएगा तब पूर्ण कलियुग आया यह समझना। ||३||

पती बरता की जोड़ || डोरी जुग गावसी ||
मंतर मूठां सीख || पिंडतं नर कवावसी ||४||

पतिव्रता स्त्री पर अपशब्द की कविताएँ रचेगे और जगत उन कविताओंको चावसे गायेंगे। मैले मंत्र,मूठ चलाने की विद्या सिखे हुए निच लोगो को पंडितजी करके मानेगे तब पूर्ण कलियुग आया करके समझना। ||४||

ता दिन कळजुग पूर || कळा सो धारसी ||
जाँ स्हा दंड साच || खोडे मे मार सी ||५||

जिस दिन कलियुग पूर्ण कळा धारण कर लेगा उस दिन परोपकारी धनवान को खोडा डालकर मारेंगे उस दिन पूर्ण कलियुग आया यह समझना।(लकडी का पैर में पहन ने का, खोडा बनाया जाता है। पैर में खोडा डालकर,खोडे में किल्ली ठोक दी,यानी उसे चला फिरा नहीं जायेगा,उसे खोडा कहते है।)।५।।

घोडी गधी के दूध || सांडयाँ के होवसी ||
सूरी कुत्ती गज दूय || जक्त भिलोवसी ||६||

हाथीनी,घोडी,गधी,सांड्णी,सुअरनी,कुतियाँ आदि जनावरों के दूध दोयेंगे और उसका दही बनाकर मथकर घी निकालेंगे और गाय,भैंस से उच्च प्रती का दूध,घी समझके पियेंगे उस दिन पूर्ण कलियुग आया यह समझना। ।।६।।

सामा मिलीयां राम || नही कोई भाखसी ||
अेक निमष ईतबार || कोई नही राखसी ||७||

आमने सामने मिलने पर एक दुजे को रामनाम कोई नहीं करेंगे। आपस में पलक झपकने इतना भी विश्वास नहीं करेंगे। ।।७।।

बेद पुराण बीचार || भक्त सो थाकसी ||
हर बिन कथणी जोड़ || जक्त मे भाकसी ||८||

वेद,पुराण के भक्त वेद पुराण की भक्ति करने मे थक जाएँगे और वह भक्ति पूरी न करते छोड देंगे। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की कथनियाँ छोड्कर विषय वासनाओकी कथनियाँ जोड्रेंगे और वे रामजी के बिना कथनियाँ जगत में गायेंगे। ।।८।।

भक्त करताँ जोय || हेरो दे पकड्सी ||
औरत सुण भ्रतार || गवाड़ चड़ झगडसी ||९||

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की भक्ति करनेवालो पर नजर रख उस भक्तिवाले को खोजकर कैद करेंगे। पत्नि पति के साथ भरे रास्तेपर कोर्ट में आदि जगह झगड्रेगी। ।।९।।

पाँच बरस की के बाळ || गंगा छिप जावसी ||
तब कळ जुग सुण सेंग || हळाहळ आयसी ||१०||

पाँच वर्ष के बालिका को बालक होगा। गंगा,जमुना,का पुण्य का महत्व खत्म हो जाएगा। उसे देवता न समझते सिर्फ पानी की नदी समझेंगे तब कलजुग हलाहल जहर के समान आ गया यह सभी ने समझना। ।।१०।।

माणस गज सम बेत || पाखंड ब्हो चालसी ||
सुभ बातां सब सेंग || असल सो पालसी ||११||

नर–नारी की उँचाई तीन फुट से इतभर तक होगी और जगत में अनेक प्रकार के निच

पाखंड, ढोंग चलेंगे। अच्छी बातें,असली बातें,शुभ बातें लोग चलने नहीं देंगे। इन शुभ बातों को लोग बंद करेंगे। ।।११।।

अेक ऋषी कूं घेर ।। ब्होत बीध मारसी ।।
क्हे सुखदेव अवतार ।। तके दीन धारसी ।।१२।।

दृष्ट लोग वेद के प्रविण ऋषि को घेरकर अनेक प्रकार से मारेंगे तब कलियुग को मिटाने के लिए अवतार प्रगटेगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।१२।।

३७१

|| पदराग केदारा ||

संतो सुणो भेष भूलो जाय
संतो सुणो भेष भूलो जाय ।।
कळजुग आणर पेठो हे घर मे ।। षटदर्शन कै आय ।। टेर ।।

संतो,सुनो ये ढोंगी साधू षटदर्शनों के भेषो समान भेष बनाकर जगत में फिरते है ये सभी ही भूले जा रहे है। ये षट दर्शनीयों की उच्च करणी तो नहीं करते बल्की षटदर्शनीयों को लज्जा उत्पन्न होगी ऐसे षटदर्शनो के भेष धारण कर निच करणियाँ करते। इनके घट में कलियुग आकर बैठा है। इस कलियुग के कारण इनकी मती षटदर्शनी की शुभ करनी करने की न रहते निच अशुभ करणियाँ करने की बनी है। ।।टेर।।

सांग बणायर स्यामी हुवा ।। भेद न जाण्यो कोय ।।
दुनियाँ सुं लड लड पेट भरियो ।। जाय जलम युँ खोय ।। १ ।।

साधू का सोंग धारण कर स्वामी होकर बैठ गए और परमात्मा सभी का पेट भरता यह भेद नहीं जाना,यह विश्वास नहीं रखा। इसकारण संसार में शिष्यों के घर जाकर शिष्योंसे लढ लढ कर पेट भरते और अपना मनुष्य देह मोक्ष पाने का भेद न जानने के कारण लढकर पेट भरने में और विषय विकारोमें खो देते। ।।१।।

आंटो माँगे पईसा जोडे. ।। दे दुनियाँ मे ब्याज ।।
घर घर को सुण न्यावज चावत ।। ओ किम होवे काज ।। २ ।।

शिष्यों के घर घर जाकर आटा माँगते। आटा बेचकर पैसा जोड्ते और यह पैसा तिर्थ धाम में न लगाते दुनिया के विकारी नर-नारी को ब्याज से बाँटते। अपना घर त्यागते,पत्नि, पुत्र,पुत्री त्यागते और जिनसे आटा,पैसा माँगते ऐसे विकारी लोगो के घर में घुस घुसकर उनके तंटे फरयाद मिटाने का न्याव करते। ऐसे तंटे फरयाद मिटाने के काम करनेसे बैरागी बनकर साधू बनने का उसका कार्य कैसे पूरा होगा?।।२।।

अमल तमाखु भांग तिजारो ।। ऊडो ल्याव स ताब ।।
के मेरे सुण पेट मारूं ।। के पाडु तेरी आब ।। ३ ।।

ये साधू आफीम,तम्बाखु,भांग,पोस्त आदि नशीली चिजे खाते। ये साधू उडो याने गाँव के लोगो के घर साधूओंकी खाने की बारी बंधी रहती,उन लोगोके घर जाकर आज मेरी

बारी है ऐसा कहते। ऐसे खाने के लिए बारी बांधने के विधि को उडो कहते। इस प्रकार बार बार जल्दी जल्दी जाकर लोगो को संताप देते,झगडा करते,त्रागा करते,इज्जत लेते,पेट पर मार मारकर तमाशा करते। ये भेषधारी साधू मोक्ष पाने के लिए बैरागी बने थे। ये साधू ऐसे नशा में रहकर जगत के सज्जन लोगो को दु:ख देते फिर ये मोक्ष में कैसे जाएँगे?।।३।।

षटदर्शण सब करणी छोड़ी ।। राख्यो तन अंहकार ।।
के सुखदेव अरू बेर भगत सूं ।। किम उतरेला पार ।। ४ ।।

ये ढोंगी षटदर्शनी साधू षटदर्शन की सभी करणियाँ त्याग देते और जगत में फुले हुए तन से भेष के अहंकार मे फिरते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ये ढोंगी षटदर्शनी जो परमात्मा के अस्सल भक्त है,उनसे भारी बैर करते,झगडा करते। जब की ये षटदर्शनी साधू मोक्ष पाने के लिए बैरागी साधू बने थे फिर इनकी ऐसे निच करणियोंसे ये साधू मोक्ष कैसे जाएँगे?।।४।।

३८७
।। पदराग केदारा ।।

सुणज्यो बाबा कळजुग बरत्यो आय
सुणज्यो बाबा कळजुग बरत्यो आय ।।
अेताई थाणा पाड दिया हो ।। जीत लिया जुग माय ।।टेर।।

अरे बाबा,कलियुग आकर बरतने लगा,उसे सुनो। वेदों ने,शास्त्रों ने तंबाखू खाना,पिना, सुंघना,दात को लगाना यह महापाप बताया है। इसलिए तंबाखू खाना,पिना,सुंघना,दात को लगाना यह महापाप है। ऐसा ब्राम्हण समझते थे और अपने ज्ञान मे भी वेद,शास्त्र का आधार देकर कथते थे। वे ही ब्राम्हण आज स्वयंम तंबाखू खाते,पिते,सुंघते,दात को लगाते और दुजो को भी खाने,पिने,सुंघने दात को लगाने का ज्ञान देते। इसप्रकार कलियुग ने संसार में सभी मुख्य जगहों को जीतकर,हंसों में कुकर्म करने की बुध्दी प्रगट कर अपने अधिकार मे कर लिया है। ।।टेर।।

ब्राम्हण कूं सुण पिवे तमाखू ।। स्यामी अेमख खाय ।।
तुळछी ऊगे नीच के हो ।। गऊ भिष्ट कूं जाय ।।१।।

ये ब्राम्हीण सतयुग,त्रेतायुग और द्वापार युग में तंबाखू को हाथ भी लगाना पाप समझते थे। वे ही ब्राम्हीण कलियुग मे तंबाखू खाना,पिना भी पाप नहीं समझते। ऐसे ब्राम्हण के उच्च मती को कलियुग ने निच कर दी। जंगलो में रहनेवाले संन्यासी पहले फलफूल खाते थे, वही संन्यासी कलियुग में मछली,पंछी समान निच वस्तुओंका भक्ष्य करते। सतयुग, त्रेतायुग,द्वापारयुग में तुलसी पवित्र जगह उगाते थे अब यही तुलसी खेती मे,विष्टा का खत दे देकर अन्य खेती के वस्तु समान धंदा करने के लिए उगाई जाती। अन्य युगों में संसार के दयालु लोग गाय को पेटभर चारा देते थे,भुखी नहीं रहने देते थे परंतु अब गाय को पेटभर खाने को नहीं मिलता इसलिए भुखी गाय आज नाईलाजसे विष्टा सरीखी

निच वस्तु खाने लगी है। ।।१।।

बेटी सांटे बापज परणे ।। झुठ साच कर जाय ।।
पईस्या किन्या का सरब गिणावे ।। सूंक ज भाड़ा खाय ।।२।।

झूठी बातों को सत्य साबीत करके पिता अपने कन्या की साठ गाठ करके अपनी शादी रचाते। कलियुग में कन्यादान न करते कन्या विक्रय कर लड्केवालोसे कन्या के पैसे लेते है। सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग में जगत के लोग लड्कीयोंकी शादी जोड्ने में धर्म समझते थे परंतु अभी विवाह जोड्ना दलाली समझते और दलाली के पैसे लेते। माता-पिता पहले अपने कन्या के शील का रक्षण करते थे वे ही माता-पिता अपने कन्या से पैसो के लिए निच कर्म कराते और पैसे कमाते और वे पैसे अपने विषय विकारो में लगाते। ।।२।।

निरपत सो सुध न्याव न भाषे ।। प्रजा डंडे बिन खून ।।
प्रथम तो सुण ध्रम न कर हे ।। जे बावे ते भून ।।३।।

सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग में राजा शुध्द न्याय करते थे परंतु कलियुग में राजा शुध्द न्याय नहीं करता। प्रजा का कोई गुनाह न होते उसे कठिण से कठिण दंड देता। कलियुग में किसीको भी प्रथम तो धर्म पुण्य करने की इच्छा ही नहीं होती फिर भी कोई धर्म पुण्य करता तो जैसे भुना हुआ अनाज खेत में बोने के पश्चात अनाज नहीं उपजता वैसे धर्म पुण्य करते। ।।३।।

नीच घरां को दान ज झेले ।। नीची संगत जाय ।।
आशिर्वाद सो पहली देवे ।। विपर सो जुग माय ।।४।।

वेद के समझ रखनेवाले ब्राम्हण निच से निच कर्मीयोके घर का दान लेते। ब्राम्हण ऐसे ज्ञानी निच कर्मी लोगो के संगती में रहकर निच वस्तु खाते पिते और विषय रस भोगते। ब्राम्हण लोग निच से निच कर्मी शिष्यों को धन,लालच के कारण शिष्य नमन करने के पहले ही सोचे समझे बिना ही आशिर्वाद दे देते। ।।४।।

गुरड़ा बेद सो बाचन लागा ।। शुद्र सो गुरू होय ।।
के सुखदेव कळजुग की बाताँ ।। क्हाँ लग कहूं में जोय ।।५।।

निच कर्म,निच हरकत करनेवाले दुष्ट लोग वेद, व्याकरण का अपने निच समझ से अर्थ लगाते और वे ही अधुरे अर्थ,गुरु बनके शिष्य को समझाते और शिष्य शाखाँए चलाते आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं कलजुग के कारण जगह जगह निच मती आयी है ये जगत के दाखले देकर कहाँ तक तुम्हें बताऊँ? ।।५।।

३९२

|| पदराग बिहगडो ||

सुणो सिष अेसा कळ जुग आसी
सुणो सिष अेसा कळ जुग आसी ।।
पखे पखे सब ग्यान कथेला ।। आपो बहोत सरासी ।। टेर ।।

अरे शिष्य सुन,भविष्य में ऐसा कलियुग आनेवाला है। सभी लोग अपने अपने पक्ष या पंथ का मतज्ञान बताएँगे और अपने ज्ञानी,ध्यानी बनने की शोभा खुद ही करेंगे। ।।टेर।।

परमारथ कुं नेक न जाणे ।। स्वारथ कूं ऊठ धावे ।।
सुभ सुभ क्रम सकळ सो त्यागे ।। असुभ सबे चुण खावे ।।१।।

परमार्थ याने परसुख के लिए थोडासा भी नहीं झुकेंगे परंतु स्वार्थ याने स्वसुख के लिए उसमें पर दु:ख कितना भी रहा तो भी उठ उठ भागेंगे। जिसमें सभी को सुख मिलता ऐसे सभी शुभ शुभ कर्म त्यागेंगे और जिसमे खुद छोड्के अन्य सभी को महादु:ख पड्नेवाले रहे तो भी खोज खोज के सभी अशुभ कर्म करेंगे। ।।१।।

सरब जात के खाता फिरसी ।। ग्यान सकळ कूं देला ।।
नीच ऊँच को पख नही करणा ।। पूज्यां इधक कहेला ।।२।।

ऊँच-निच खानेवाले सभी जात के लोग साथ में बैठकर ऊँच-निच खाएँगे और ऊँच-निच फरक न करते ज्ञान सभी को देंगे। निच कर्म करनेवाले से भी वेद,पुराण की जप,तप, यज्ञ ये करणियाँ करायेंगे। निच कर्मी और ऊँच कर्मी यह भेदभाव नहीं रखेंगे और निच कर्मी मनुष्य की पूजा करेंगे और उसे ऊँच कर्मीयो से अधिक मानेंगे। ।।२।।

माहो मांह निंद्या बोहो चुगली ।। अेक ध्रम बिच व्हेगा ।।
माठा क्रम निष्ट कर आसी ।। तां की पूजा लेगा ।।३।।

परिवार में,समाज में,आपस में एवंम एक ही धर्म में एकदुजे की ही निंद्या चुगल्या बहुत चलेगी और कुकर्म,नित्कृष्ट कर्म करके आएँगे ऐसे निच लोगो की ब्राम्हण पूजा ग्रहण करेंगे,बढाई करेंगे। ।।३।।

भांग तमाखु अमल तिजारो ।। सुरे पियेगो भाई ।।
तज घर बार लोहो सस्तर सूं ।। मार मरेगो जाई ।।४।।

भांग,तंबाखू,अफीम,पोस्त,दारु पियेंगे और अपना घर त्यागकर साधू बनेंगे और शस्त्र बाँधकर लोगो से लढाई करेंगे वहाँ लोगों को शस्त्रोंसे मारेंगे और खुद मरेंगे। ।।४।।

सिष सो मेर म्रजाद न राखे ।। गुरू करसी सुण आसा ।।
मूंढे भजन अंतर मे माया ।। दिल गुंथेला पासा ।।५।।

गुरु की मान मर्यादा शिष्य कुछ भी नहीं रखेगा और गुरु शिष्य की अपने गुरु से भी जादा मर्यादा रखेगा। गुरु लोग शिष्य से धन माल,भोग की आशा करेंगे,भक्ति की आशा नहीं करेंगे। ये साधू मुख से भजन करते दिखाएँगे और अंतर में माया जोड्ने का और विषय विकार के विचार में फिरेंगे और मन में कितने ही तरह के जाल बनायेंगे। ।।५।।

क्रोड निनाणु कळजुग माही ।। नरक माँह सब जावे ।।
क्हे सुखराम भणो सो गीता ।। बेद भागवत गावे ।।६।।

कलियुग में इसप्रकार के निन्यानवे करोड साधू नरक में जाएँगे। आदि सतगुरु सुखरामजी

 || राम नाम लो, भाग जगाओ || राम

महाराज कहते है कि,वे गीता बाचो,वेद पढो या पुराण पढो वे सभी नरक में जायेंगे ऐसा वेद भागवत स्वयम् गाते है। ॥६॥

१८४

॥ पदराग केदारा ॥

जुग मांहि सोही फकीर बखाण

जुग मांहि सोही फकीर बखाण ॥

ओर सबी अे ठगरे ठगारा ॥ रहया हे जक्त सुख माण ॥टेर॥

जगत में जो बंकनाल के रास्तेसे उलटकर गढ के उपर चढ गया और मालिक के साथ बात कर रहा वही सच्चा फकिर है,बाकी सभी फकिर दिखते परंतु वे फकिर नहीं है वे सभी ठग है ठगने वाले है।(बाकी के सभी साधू संसार के लोगो को ठगकर),दुनिया के सुख भोग रहे है,(विषय रस खा रहे है)। ॥टेर॥

असल जोगी टुकड़ा माँगे ॥ ओर सकळ को त्याग ॥

दुनिया सेती नांय परोजन ॥ रहया हे राम सूं लाग ॥१॥

अस्सल जोगी त्रिगुणी माया से लेकर संसार के सभी सुख त्यागकर गाँवो में टुकडे माँगकर पेट भरता है और रामनाम से लगे रहता है। उसको जगत के लोगो से लेशमात्र भी लेना देना नहीं रहता वह मालिक रामजी से रचामचा रहता। ॥१॥

ऊलटी जगत की क्रणा आवे ॥ दया घणी घट मांय ॥

बणे तो किसी पर मेहेर कीजे ॥ दु:ख बटावण जाय ॥२॥

अस्सल फकिर को खुद के दु:ख की पर्वा नहीं रहती उलटा दुनिया को काल खाता इसकी करुणा आती। उसके घट में बहुत दया रहती। उससे बने जब तक किसी पर भी दु:ख पडा दिखा तो उसका दु:ख बाटने चला जाता है। ॥२॥

फेर फकिर ज्याँ फिकर न ब्यापे ॥ मस्त रहे दिन रात ॥

जन सुखदेव क्हे उलट गढ चडीयाँ ॥ करे धणी सू बात ॥३॥

और भी असली फकिर को काल की कभी फिकर नहीं व्यापती। वह अपने मालिक के साथ रात-दिन मस्त रहता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि,अस्सल फकिर बंकनाल के रास्ते से उलट गड पर चढता और मालिक के साथ भरपेट बातें करता। ॥३॥

३२०

॥ पदराग कल्याण ॥

साधो भाई त्याग दिया हम सोई

साधो भाई त्याग दिया हम सोई ॥

मात पिता अरूं नार सुत बंधु ॥ अेक न राख्यो वो कोई ॥टेर॥

साधू भाई,मैंने जैसे जगत के साधू माँ,बाप,पुत्र,पत्नी,भाई आदि को त्यागकर त्यागी बनते वैसे मैंने भी माँ,बाप,पुत्र,पुत्री,पत्नि को त्यागा। ॥टेर॥

ममता माय बाप डिग पच रे ॥ नार कल्पना त्यागी ॥

सुत सो सोच अहुँ बळ बंधु ।। छाड़ सुरत हर लागी ।।१।।

जैसे त्यागी साधू ने माता को त्यागा तो मैंने देह धारी माता को नहीं त्यागा उसको साथ में रखा और मैंने माता में जैसे ममतारुपी माया रहती, वह मेरे में प्रगटी हुई ममतारुपी माया माता त्यागी। जैसे त्यागी ने पिता को त्यागा तो मैंने देहधारी पिता को नहीं त्यागा, पिता में जो झिपिचरुपी पितामाया रहती ऐसे मेरे घट में उपजी हुई झिपिच माया त्यागी। मैंने त्यागी साधू समान देह धारी नारी नहीं त्यागी, मैंने मेरे मनमे इंद्रियोंके सुखों की कल्पना नारी रहती थी वह कल्पना नारी त्यागी। त्यागी साधू ने पुत्र त्यागा तो मैंने पुत्र को नहीं त्यागा,पुत्र के कारण मेरे घट में फिकीर उपजती वह त्यागी। त्यागी साधूने बंधु त्यागे मैंने मेरे बंधू नहीं त्यागे,बंधू के कारण मेरे में जो अहंम बल उपजा था वह त्यागा। इसप्रकार इन सभी को त्यागकर मैंने मेरी सुरत रामजी में लगाई। ।।१।।

बिभो बंछना सारी छांडी ।। कुळ बोवार ज कारा ।।
पइसा टका तज्या मै तेरे ।। सत्त मत्ता वो हमारा ।।२।।

त्यागी साधू ने वैभव त्यागा तो मैंने वैभव से उपजी हुई वंछ्ना त्यागी,वासना के विकारोंके सुख त्यागे वैभव नहीं त्यागा। त्यागी साधूने कुल त्यागा तो मैंने कुल के मोह ममता के व्यवहार त्यागे कुल नहीं त्यागा। त्यागी साधूने पैसा त्यागा तो मैने पैसो से उपजनेवाला मैं तू त्यागा और मेरा सत्त मत रामजी में लगाया। ।।२।।

सेज सोड आन सब छाडया ।। कपट बेल रथ सारा ।।
माया मंतर जंतर सो त्यागर ।। राख्यो हे नाँव बिचारा ।।३।।

त्यागी साधू ने ओढना,बिछना त्यागा तो मैंने रामजी छोड्कर अन्य सभी देवता,सभी क्रिया कर्म त्यागे। त्यागी साधू ने रथ बैल त्यागा तो मैंने कपट रुपी रथ बैल त्यागा। त्यागी साधू ने ग्रहस्थी जीवन के मंतर जंतर त्यागे तो मैंने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इस माया के जंतर मंतर त्यागे और मैंने सिर्फ एक नाम का विचार रखा। ।।३।।

अणभी हुवा भरम सब जाणर ।। मूळ शबद लियो चीनी ।।
के सुखराम भजन हे साचो ।। ओर भरमना होय कीनी ।।४।।

त्यागीयोंने माता,पिता,पुत्र,धन,कुल को भ्रम समझकर त्यागे परंतु ये त्यागी भ्रम मिटानेवाला मूल शब्द नहीं पहचान पाए। ये त्यागी भ्रम में पड्कर आवागमन में अटक गए। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,साधू ने जैसे स्थुल माया माता,पिता, पत्नि,धन,कुल को भयभीत होकर त्यागा है वैसा मैंने भी काल के मुख में डालनेवाली माया से भयभीत होकर काल के मुख में रखनेवाली माया को त्याग दिया और मैंने भयरहीत होकर काल से मुक्त करा देनेवाला शब्द खोजा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतशब्द प्रगट करना यही एक सत्य है इसके अलावा जो कुछ भी त्याग करना है यह माया है,यह भ्रम है। ।।४।।

२८

|| पदराग सोरठ ||

बाँभीड़ा खीज कांय दुख पायो

बाँभीडा खीज कांय दुख पायो ||

हे तो अेक फेर क्रणी कों || तां तें बटो लगायो ||टेर||

अरे निच कर्मी,तू खिझकर क्यों दुःख पाता है। हम सभी तो एक ही ब्रम्ह है परंतु सबके करणी का फेर है। तुम मरे प्राणी को खींचते हो,उनकी चमडी निकालते हो,मांस खाते हो,दारु पिते हो यह बट्टा तुम्हें लगा है इसलिए तुम्हारी जाती निच हुई। ||टेर||

लोहो सो अेक जात मे बटो || करड़ो कंवळो जोवे ||

पारस लागां अेक सोळ वो || दुज्यो छछियो होवे ||४||

लोहा,लोहा तो सभी एक ही लोहा है,परन्तु उस लोहे की जाती में बहुत अन्तर है,वह उसके कठोरता और नम्रता पर देखा जाता है। एक अच्छा लोहा पारस को लगकर उत्तम सोना बन जाता है और दूसरा हलका लोहा पारस को लगकर(छाँछ जैसे)सफेद सोना बनता है। ||४||

कदळि पडयो कपुर कहाणो || अहि मुख बिष होई ||

सीप पड़े सो मोती होवे || जात धाम गुण जोई ||५||

उपर आकाश से पानी एक जैसा ही पडता है उस पानी में से कदली में पानी पडता, उसका कपूर बन जाता और वही पानी साँप के मुँख में पडता,उसका जहर बन जाता और वही आकाश का पानी,मोती के सीपो में जाकर पडता है,तो उसका मोती बन जाता है,इसीतरह से तुम्हारे और हमारे जाती में और रहने के स्थान में,गुण अलग-अलग दिखाई देते है। जैसे पानी घोंघे (सीपे)के मुख में गिरता है,उसका मोती बनता और साँप के मुख मे गिरा,तो विष बना इसी तरह,तुम भंगी के घर जन्म लिए,इसलिए भंगी हुए और हम ब्राम्हण के घर जन्म लिए,इसलिए ब्राम्हण हुए,इसी प्रकार घर जन्म लेने के गुण अलग-अलग देखने में आता। ||५||

कबु अेक कसर पड़यांसूं भोपत || मेले निरसी जागा ||

यूं सुखराम बांसली कसर || नीच जात नर बागा ||६||

कभी भी कोई गलती करता,तो उसे राजा खराब जगह पर भेजता है। इसीतरह तुम्हारे पूर्व जन्मों के कुछ गलती रहने के कारण,तुम निच जाती के भंगी हो गए। ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। || ६ ||

२९

|| पदराग सोरठ ||

बाँभीड़ा खीज कांय दुख पायो

बाँभीडा खीज कांय दुख पायो ||

हे तो अेक फेर क्रणी कों || तां तें बटो लगायो ||टेर||

अरे निच कर्मी,तू खिझकर क्यों दु:ख पाता है। हम सभी तो एक ही ब्रम्ह है परंतु सबके करणी का फेर है। तुम मरे प्राणी को खींचते हो,उनकी चमडी निकालते हो,मांस खाते हो,दारु पिते हो यह बट्टा तुम्हें लगा है,इसलिए तुम्हारी जाती निच हुई। ।।टेर।।

बस्तर सकळ पेड मे सूंती ।। मोल पोत रंग लारे ।।
रेंवत अेक मोल सो न्यारे ।। देही जात गुण सारे ।।१।।

मूल में सभी कपडे सुत से ही बनते है। हर कपडे का मोल,पोत,रंग न्यारा रहता है। ऐसे ही घोडे अन्य घोडे के समान ही होते परंतु एक घोडा रेस का होता है और एक घोडा पांचाल की गाडी खिंचनेवाला होता ऐसा जगत में घोडे के देह के जात,गुण के कारण फरक होता है। इसी प्रकार कर्मो के कारण तुम्हारे में और हमारे में फरक है यह समझो और उस पर नाराजी मत करो। ।।१।।

जडी सकळ नीर सूं उपजी ।। अेक मास अेक दाडे. ।।
अेकण सबही रोग गमाया ।। अेक ऊलट फीर पाड़े ।।२।।

सभी जड्याँ पानी से उपजती। वे जड्याँ एक ही महिने में एक ही मिट्टी में बोये जाती। उन्हें पानी भी एकही दिया जाता परंतु एक जडी अमर जडी रहती वह मुर्दे को जिन्दा करती और एक जडी जहरीली रहती वह जिंदे को मार देती ऐसा दोनो जड्यों में फरक पडा। इसीप्रकार हम और तुम करणीयों के कारण ऊँच-निच बने उसमें खिजना क्यों? आगे निचजाती में नहीं आवे यह सतज्ञान खोजना। ।।२।।

बोलण हार जीभ हे अेकी ।। आहिज जीते आ हारे ।।
के सुखराम बंधावे रसना ।। आही बिष उतारे ।।३।।

सभी के मुख में बोलनेवाली एक ही जीभ रहती। इस जीभ से जो राम नाम लेते वे काल को जीत लेते और जो निच ज्ञान कथते वे काल से हारकर नरक के दु:ख में पड्ते। जो इस जीभ से ज्ञान से बोलता वह अज्ञान को जीत लेता और जो अज्ञान से बोलता वह ज्ञान से हार जाता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जीभ एक ही है परंतु जैसे एक ही जीभ मंत्र बाँधकर साँप,बिच्छु का विष चढा देती तो वही जीभ मंत्र बाँधकर घट में चढे हुए साँप,बिच्छु के विष को उतार देती ऐसा ही सबके करणीयों का फरक है। ।।३।।

०४

|| पदराग मंगल ||

|| आन ध्रम दिन चार ||

आन ध्रम दिन च्यार ।। उपज खप जाय हे ।।
ब्रम्ह भक्त हर भेद ।। अटळ जुग माय हे ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह अन्य दुसरे धर्म,संसार में उत्पन्न होते है और मिट जाते है। यह अन्य दुसरे धर्म उत्पन्न होकर चार दिन रहते है और फिर खप

जाते है याने मिट जाते है। रामजी छोड्कर अन्य सभी देवताओं के धर्म जन्मने और मरने के फेरे के है और यह ब्रम्हभक्ति करनेवाला भक्त और ब्रम्हभक्ति का भेद जाननेवाले ये जगत में अटल है यह नहीं टलते है। ब्रम्हभक्ति याने रामजी की भक्ति जहाँ जन्मना और मरना नहीं है ऐसे अटल पद में पहुँचने की है। ।।१।।

अंत समे लग जोय ।। भक्ति में आवसी ।।
जाँ को ओ गुण होय ।। नर्क नहि जावसी ।।२।।

पापी से पापी मनुष्य भी अपने अंतिम साँस तक हर के भक्ति में आ गया तो भी उसका नरक छुट जाता यह गुण होता है। ।।२।।

अंत समे मे भुप ।। महा हर गावियो ।।
गयो नरक बिष छूट ।। प्रम पद पावियो ।।३।।

काशी के महापापी राजा ने अंतिम समय के एक वर्ष पहले से हर का सुमिरन किया। इस एक वर्ष के स्मरण से उसका नरक छूट गया और परमपद पहुँच गया। ।।३।।

सात दिवस रट राम ।। परीक्षत हालियो ।।
रिष को मेटयो सराप ।। मुक्त मे मालियो ।।४।।

परीक्षित राजा को ऋषी से सर्पदंश होकर अकाली मृत्यु का श्राप मिला था। अकाली मृत्यु से जीव भूत,पित्तर के महादु:ख के योनी में पड्ता। परीक्षित राजा ने अंतिम के सात दिन हर का स्मरण कर भूत,प्रेतादिक की योनी काट ली और सुख के मुक्ति में मिल गया। ।४।

दलिपत मोहोरत दोय ।। रटयो हे राम ने ।।
गयो हे जलम वो जीत ।। सिधायो धाम ने ।।५।।

राजा दिलीप के मौत को दो मुहूर्त बाकी थे। दिलीप राजा ने वशिष्ट मुनी से भेद धारण कर दो मुहूर्त में रामनाम लिया और मानव तन का जन्म परमधाम प्राप्तकर जित लिया। ।।५।।

अजामेळ अंत काळ क ।। दुतां मारियो ।।
के सुखदेव हरी नाम ।। लेत सम तारियो ।।६।।

अजामेल का अंतिम समय आया था। उसे रामनारायण नाम का पुत्र था। अजामेल को यमदूत उसके निच कुकर्मोनुसार मार मारकर ले जाने आए थे। जब यमदुत अजामेल को मारने लगे तब अजामेल ने यमदूतो के मार से बचने के लिए अपने पुत्र रामनारायण को राम्या राम्या कहकर बुलाया। अजामेल के मुख से राम्या राम्या निकलते ही यमदूतों ने उसे छोड दिया। ऐसे निच,कुकर्मी अजामेल का राम्या राम्या इस नाम मे रामनाम आने से उध्दार हो गया। इसप्रकार अंतिम समयतक भी कैसे भी जानते अजानते रामनाम का उच्चारण किया तो भी नरक छूट जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।६।।

|| पदराग बधावा ||

चालोनी रे हंसा

चालोनी रे हंसा || अपणा राम जना के देस ||
वा पद कूं बंछे सदा रे || सिव सनकादिक सेंस ||टेर||

आदि से दो देश है। एक रामजनो का देश याने विज्ञान बैरागी संतों का देश है तो दुजा माया जनो का याने मोह ममता का होनकाल देश है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी हंसों को चेताते है कि,आप सभी अपने कोरे सुख के रामजनो के देश चलो। उस देश की बंछना शंकर,विष्णु,ब्रम्हा,सनकादिक,शेष आदि सभी होनकाल के छोटे बडे देवता नित्य करते। ||टेर||

या जग मे थिर कोई नही रे || सुख दु:ख बारम बार ||
ब्रम्हा बिसन महेस सारा || फिर फिर ले अवतार ||१||

इस जगत में सनकादिक,शेष,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये कोई भी स्थिर नहीं है मतलब अमर नहीं है। ये सभी प्रलय में जाते और प्रलय के बाद बार–बार प्रलय में जानेवाला देह धारण करते। ऐसा इन सभी के पिछे बारबार गर्भ में आने का और काल से मारे जाने का दु:ख लगा रहता है। ||१||

सुर नर सब सांसे पड़यारे || जंवरे माँडयो जाळ ||
पीर पैकंबर मुनि जनारे || से नही बंच्या काळ ||२||

सभी देवी–देवता सभी नर–नारी यम के जन्म–मरन के जाल से कैसे छुटे?इस चिन्ता में पडे है। काल के जन्म–मरन के जालसे चोबीस पीर,एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर, अठ्ठासी हजार ऋषी मुनी,कोई नही बच सके। ||२||

जामण मरणा जहाँ नही रे || जांहाँ नहि सांसा सोग ||
मोहो माया ब्यापे नही रे || म्हारा संत जना के लोग ||३||

मेरे संतजनों के देश में यह जन्म मरने का फेरा नहीं है इसलिए वहाँ काल से मुक्त होने की चिंता,फिकीर नहीं है या मरने के बाद सोग नहीं है। वहाँ काल अपने जाल में फँसायेगा ऐसी जरासी भी यहाँ के समान मोह ममता नहीं है। ऐसा मेरे संतजनो का कोरे सुखों का लोक है। ||३||

या घर मे नित नीपजे रे || मुक्ता मोती हीर ||
अनंत हंस केळा करे रे || उण सुख सागर की तीर ||४||

संतजनों के अमर घर में महासुख देनेवाले मुक्ता,मोती,हिरे नित्य निपजते। ऐसे सुख सागर के तीर पर अनंत हंस सदा क्रिडा करते और क्रिडा के सुख में मगन रहते।||४||

बोहो ताई संत बिराजिया रे || अज हुँ बोहोता जात ||

भै दु:ख कोइ ब्यापे नही रे ।। म्हारा सतगुराजी रो साथ ।।५।।

वहाँ बहुत से संत पहुँचे है और आगे भी बहुत से हंस पहुँचेंगे। वहाँ सतगुरु साथ रहने के कारण भय और दु:ख कोई भी व्याप्त होता नहीं याने घेरता नहीं। ।।५।।

केसर बरणा मारगा रे ।। आवे अमर बिवाण ।।
सामा संत बधावसी रे ।। धिन धिन केंता बाण ।।६।।

वहाँ जाने के लिए केशर के वर्ण का रास्ता है। संतों को वहाँ ले जाने के लिए बावन गादी का अमर विमान आता। धरती से वहाँ जानेवाले संतों का वहाँ के सभी संत सामने आकर अती प्यार से भारी स्वागत करते। संतों ने होनकाल का देश छोडा इसलिए वहाँ के सभी संत बहुत खुश होते इसलिए वहाँ पहुँचनेवाले सभी संतों की वहाँ के संत अंतर से धन्य धन्य करते। ।।६।।

अधर दीप वो झिग:मिगे रे ।। ज्यां मे अमर अे वास ।।
निर्भे संत बिराजिया रे ।। ज्यारो नही हे बिनास ।।७।।

वह रामजी का दिप अधर है। बिना किसी होनकाल के टेके का है। वह दिप सत प्रकाश से झिगमिग चमक रहा है। वह झिगमिग झिगमिग प्रकाश संतो को बहुत भाँता है। ऐसे झिगमिग प्रकाश मे संतों के निवास है। उन महासुखों के निवासो में संत बिराजते है। वे निर्भय है। उन्हें काल से विनाश होने का जरासा भी डर नहीं है। ।।७।।

सदा सरीसी ओ सता रे ।। अमर संता की देहे ।।
अनंत जुगाँ नहि बीछड़े रे ।। नित नित नवला नेहे ।। ८ ।।

उन अमर संतों के देह की अवस्था सदा महासुख लेने के योग्य रहती है। यहाँ के जीवों के सरीखी सुख लेने के लिए अपाहिज,बुढापे समान दुबली अवस्था कभी नहीं बनती। वहाँ पहुँचा हुआ हंस वहाँ से बिछड्कर होनकाल मे कभी नहीं आना चाहता। वहाँ नित्य नित्य नये नये एक के पिछे एक भारी से भारी सुख रहते। ।।८।।

जन निपजे म्रत लोक मे रे ।। जै जै व्हे सुर लोक ।।
बटें बधाई उण देस मे रे ।। कोइ संत पधारे मोख ।।९।।

मृत्युलोक में जब संत निपजते एवंम मृत्युलोक से जब संत मोक्ष में जाते तब ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति,इंद्र एवम सभी देवताओं के लोको के देव संत की जय जयकार करते। रामजनों के देश के संत आपस में मृत्युलोक का संत आने का शुभ समाचार देते। हमारे सरीखा यह भी हंस शुरवीरता से जुलमी काल से मुक्त हो गया इसलिए आपस में एकदुजे का अभिनंदन करते और भाँति भाँति प्रकार के उत्सव मनाते। ।।९।।

बार बार नर देहे नही रे ।। करलो अपणो काज ।।
जन सुखिया इण जीव की रे ।। म्हारा संत जनाने लाज ।।१०।।

यह नर देही बार बार नहीं मिलती। यह तैंतालीस लाख बीस हजार साल के चौरासी लाख

योनि के दु:ख भोगने के पश्चात एक बार बडे मुश्किल से मिलती। इसमे सतगुरु का संग मिलेगा यह बहुत मुश्किल रहता। इसलिए सभी हंसों आपको मनुष्य देह मिला है और सतगुरु का संग मिला है इसलिए आप अपना मोक्ष जाने का कारज कर लो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे काल के जुलुमों में फँसे हुए जीवों की संत जनों को दया आती, करुणा आती और सभी जीवों का काल छुटे यह लाज रहती। जैसे रामजी को द्रोपदी का चीर खुंटे नहीं और उसकी स्त्री करके बेअब्रु होवे नहीं यह लाज आती थी इसलिए रामजी ने उसका चिर अखुट कर दिया था। कुबुध्द कौरव थक गए परंतु उसका चिर नहीं खुटा ऐसी लाज संतों को जीवों की आती। काल पच पचकर थक जाता परंतु सतगुरु के शरण में गया हुआ जीव रामजनों के देश जाता ही जाता। ।।१०।।

९९

।। पदराग मंगल ।।

।। धर मानव अवतार ।।

धर मानव अवतार ।। न गायों राम कूं ।।
गया वे जमारो हार ।। चल्या जम धाम कूं ।।१।।

जिस जिस नर–नारीने मनुष्य तन पाकर रामजी का गायन नहीं किया और बली माँगनेवाले देवी–देवताओं के भक्ति में और विषय वासनाओं मे रमके मनुष्य तन हार गए है। उन्हें यम, यम के धाम दु:ख भोगवाने ले जाता है ।।१।।

अंत समे के लेण ।। भजन नर करत हे ।।
सुख संपत सब छाड ।। ध्यान हर धरत हे ।।२।।

पूरी उम्र रामजी का भजन करना भूल गया और शरीर छुटने के चंद साँसो पहले सुख संपत्ती को झूठा समझकर उसमें से मोह निकाल दिया और वही प्रेम हर के ध्यान में लगा दिया तो भी वह जीव यमद्वार ले जाने से छुट जाता है। ।।२।।

सुणज्यो सब नर नार ।। समो अंत आवसी ।।
सिंव्रण बिन जमदूत ।। पकड ले जावसी ।।३।।

हर मनुष्य के शरीर का अंत समय आएगा और अंतिम समयतक भी हर का स्मरन नहीं हुआ तो उस जीव को यम निश्चित रुप से यमधाम को पकड ले जाता यह सभी जीवों ने ज्ञान से समझना है। ।।३।।

छाड जक्त की रीत क ।। भक्त समाई ये ।।
जम जालंम फिर जाय क ।। प्रम पद पाई ये ।।४।।

अंतिम समय मे कुटुंब परीवारवालो ने जगत की याने जीव को काल ग्रास ने की रीत त्यागकर हर के भक्ति की रीत करनी चाहिए। हर भक्ति की रीत करने से जानेवाले जीव का जमघाट छुट जाता है और उसे अनंत महासुखों का परमपद प्राप्त हो जाता। ।।४।।

चाले कोई जन धाम ।। इसी बिध कीजिये ।।

कर बेकूटी उच्छाव || बोळावो दीजिये ||५||

जीव अमरधाम पधारने पर जीव के देह को सुगंधित जल से स्नान करावे,सुशोभित वस्त्र और गहने पहनावे,रामराम कहकर बैकुटीमें बैठावे और आनंद के साथ बिदाई देवे (इसप्रकार के गहने,वस्त्र पहनकर बिदाई देने के विधि को बोळावो दिजीए कहते है)। ||५||

कोट कोट फळ होय || बेकूटी काड़ियाँ ||
हंस दुवा दे जाय || असुभ राहा छाडियाँ ||६||

और देह को सिडी पर सुलाके न ले जाते बैकुटीमें बैठाके ले जावे। बैकुटीमें ले जाने से बैकुटी निकालनेवाले माता,पिता,पत्नी,पुत्र ऐसे सभी कुटूंब परीवार को,रिश्तेदारों को तथा सभी हितचिंतक को कोटी कोटी सुखों के फलों की प्राप्ती होती। मृतक के पिछे दु:ख के आँसू बहाने की,रोने की विधियाँ त्यागने पर धाम गया हुआ हंस आनंद पाता और बैकुटी निकालनेवाले तथा बैकुटी में सामिल होनेवाले सभी हंसों को जानेवाला हंस आशिर्वाद देता। ||६||

जे कोई रोवे नाय || आँसू नहि नीसरे ||
के सुखदेव वो जीव || बिषे दु:ख बीसरे ||७||

जिस मृतक के कुटुंब परिवार के लोग मृतक के पिछे आँसू बहाते नहीं,रोते नहीं और किसी प्रकार का दु:ख मनाते नहीं ऐसा हंस अपूर्ण भक्ति के कारण सुख के धाम नहीं पहुँचा और फिरसे धरती पर जन्मा तो भी वह हंस अन्य भक्ति में न जाते रामजी के भक्ति में ही रहता और उसे दु:ख देनेवाले विषय विकारी कर्मो की भूल पड जाती और उसे विषय विकारी कर्म नहीं सताते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयों को समझा रहे है। ||७||

१०३
|| पदराग मंगल ||

|| धिंन धिंन सो हंस भाग ||

धिन्न धिन्न सो हंस भाग || बिषे सब पालीया ||
म्रत लोक मे आय || कारज कर चालीया ||१||

जिस जिस हंस ने मृत्युलोक मे मनुष्य शरीर धारण कर शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध समान सभी विषय विकार त्यागे है और परमधाम पाने का कारज सफल किया है वे सभी हंस धन्य है, धन्य है। ||१||

देव लोक के माँय || आनंद सो होत हे ||
आज बिसन को लोक || बाट सो जोत हे ||२||

परमधाम जाते वक्त संत के मार्ग मे देवताओं के लोक लगते है। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा इंद्र सहीत सभी देवताओं को संत के पधारने का आनंद होता है। इसलिए विष्णु सहीत

सभी जिस दिन संत धाम पधारते उस दिन संत पधारने की बेसबरी से बाट देखते। ||२||

धिन्न धिन्न हो पुळ आज || हंस सो आवसी ||
म्रत लोक हर गाय || बोत सुख लावसी ||३||

ये देवता जानते की मृत्युलोक से हर गायन करके परमधाम पधारनेवाले संत देवताओंके लोक में बहुत से अनोखे सुख लाते,वे सुख भोगकर देवताओं को अनोखा आनंद मिलता। ऐसा सुख का भारी दिन आज आया है। इसलिए आज का दिन धन्य है। ||३||

यूँ हर जोवे बाट || ग्यान सुण जोईये ||
जे चावो सुख चेन || मति कोई रोईये ||४||

यह जगत के सभी लोगो ने ज्ञान से समझना चाहिए कि,हर याने विष्णु सहीत सभी देवता संतों से सुख पाने की राह देखते है फिर हमारे परिवार का हंस सुख में जाना चाहिए दु:ख में नहीं पड्ना चाहिए ऐसा अगर सही मे सभी चाहते है तो सभी ने जानेवाले हंस के पश्चात रोना नहीं चाहिए। ||४||

रोयाँ जमका दूत || दोड़्याँ आवसी ||
ध्रमराय के द्वार || घेर ले जावसीं ||५||

रोने से यम के दूत दौड के आएँगे और जीव को घेरकर धरमराय के दरबार मे ले जाएँगे। ||५||

मानो बचन हमार || सही कर लीजीयो ||
छाड़ जक्त की रीत || भक्त राहा कीजी यो ||६||

यह मेरे बचन सत्य है इसमे कोई अंतर नहीं यह मानकर दु:ख देनेवाली जगत रीत त्यागीये और सुख देनेवाली कैवल्य की रीत साधीये। ||६||

जुग चालां सूं जोय || हंसो दु:ख पावसी ||
के सुख देव सब साध || गुन्हो सिर आवसी ||७||

जगत के रोने धोने के रीत से हंस दु:ख पाएगा और दु:ख की रीत करनेवालो के सिर पर गुन्हें बाँधे जाएँगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी साधूओं को तथा स्त्री–पुरुषों को कह रहे है। ||७||

१०४

|| पदराग मंगल ||

|| धिंन धिंन सो हंस जिव ||

धिन धिन सो हंस जीव || मानव तन पाय के ||
साहेब कूं दिन रात || गयो नर गाय के ||१||

जिस हंस जीव ने मनुष्य तन में आकर सतस्वरुप साहेब का रात–दिन गायन किया है और शरीर छुटने पर परमधाम पाया है वह जीव धन्य है,धन्य है। ||१||

किया सब सुभ काम || असुभ सब पालिया ||

सिवऱ्यों सिर्जण हार || कारज कर चालिया ||२||

जिस जीव ने अपने मनुष्य देह में साहेब के धाम पहुँचानेवाले ज्ञान,ध्यान के शुभ काम किए है और नरक में गिरने सरीखी पाँच विषय वासना में रमने के अशुभ काम का त्याग किया है और सिरजनहार साहेब का रात-दिन सुमिरन कर काल से मुक्त होने का कार्य किया है वह जीव धन्य है। ||२||

होय उजागर जीव || चल्या हे धाम ने ||
धिन्न धिन्न वे नर नार || गायो ज्याँ राम ने ||३||

गर्भ में रामजी के साथ रामनाम का सुमिरन कर साहेब के धाम मे जाने का करार किया था। उस करारनुसार रामनाम सुमिरन किया है और साहेब का धाम प्राप्त किया है। ऐसे जिस जिस नर-नारी ने उजागर होकर शरीर त्यागा है वे सभी नर-नारी धन्य है,धन्य है। ||३||

जब लग जुग मे बास || सांई नही बीस रे ||
धिन्न वाँको सुण भाग || बेकूटी नीस रे ||४||

जो जो नर-नारी मनुष्य शरीर में जगत में जब तक बास करते तब तक पुरे समय में पलभर के लिए भी साँई भुलते नहीं और उनके शरीर छुटने के पश्चात उनके कुटुंब परिवार के लोग उन्हें सिडी पर सुलाके न ले जाते बैकुटी मे बैठाकर आनंद उत्सव के साथ अग्नी दाग के जगह ले जाते ऐसे सभी नर-नारीयों के भाग्य धन्य है,धन्य है । ||४||

गरूड बूझियो आय || बिसन यूं भाकियो ||
अन्त समे उच्छाव || आनन्द सत राखियो ||५||

गरुड ने विष्णू को अंतसमय मे कैसी विधि करनी चाहिए?यह प्रश्न पूछा। उस पर विष्णु ने गरुड को अंतिम समय मे मृतक के देह को बैकुटी में बैठाकर आनंद उत्सव करते हुए अग्नीडाग के जगह ले जाना चाहिए और सत्तसाँई के(जो कल भी था,आज भी है,कल भी रहेगा ऐसा कोई समय नहीं था वह नहीं था और ऐसा कोई समय नहीं रहेगा की वह नहीं रहेगा)साक्ष से जानेवाले के देह को आनंद मनाते हुए और सत रखते हुए अग्नीदाग देना चाहिए। ||५||

दिन द्वादस जोय || हरि जस गावसी ||
क्हे सुखदेव वो जीव || सुण्या सुख पावसी ||६||

ऐसे सतसाँई का बारह दिनतक उनके घरवालो ने शोभा तथा ज्ञान,ध्यान करना चाहिए। ऐसी आनंद की विधि करनेपर जानेवाले हंस को बहुत सुख मिलते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर नर-नारी को समझा रहे है। ||६||

१६०

|| पदराग मंगल ||

|| जाग जाग धर जाग क ||

जाग जाग धर जाग क || सेंस जगाईयो ||
पुत्तर जग मे खेल || रम घर आईयो ||१||

अग्नीदाग के जगह पहुँचने पर धरती तथा शेषनाग को प्रार्थना कर जागृत करना चाहिए। शेषनाग को ररंकार के ध्वनि की गर्जना करने की प्रार्थना करनी चाहिए। धरती,आकाश, वायु,अग्नि,जल से बना हुआ आपका पाँच तत्वों का पुत्र जगत में रामनाम में रमकर साँई के घर निकला है। ||१||

लेज्यो सार संभाळ || ग्रभ मती दीजीयो ||
तम प्रगट पाँचू देव || सबे सुण लीजियो ||२||

इसलिए आप सभी आकाश,वायु,अग्नि,जल तथा धरती देवता प्रगट होकर इस पुत्र को आपका जानकर और इसके सभी अवगुण माफ कर फिरसे गर्भ में न डालते संभाल करो यह बिनती है,ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए। यह सभी लोग सुन लिजिए। ||२||

ब्रहमंड पवन तेज || अप धर मानीयो ||
ओगण इसका छाड || आपणो जाणियो ||३||

आकाश,वायु,अग्नि,जल और पृथ्वी तुम यह बात मानो। यह पाँच तत्व से जो शरीर पैदा हुआ था,इसका अवगुण छोड़कर,तुम तुम्हारे पाँच तत्व से पैदा हुए इस शरीर को,तुम्हारा ही समझकर,तुम्हारे अन्दर अपना भाग मिला लो। इस देह में से आकाश का भाग,आकाश में मिला लो। वायु का भाग,वायु में मिला लो। अग्नि का भाग,अग्नी में मिला लो। जल का भाग,जल में मिला लो और बचा हुआ पृथ्वी का भाग,पृथ्वी में मिला लो। ||३||

स्मरथ सामी राम || सुणो सत सांईयाँ ||
चेतन हंस संभाळ || लेवो हर माईयाँ ||४||

समर्थ स्वामी राम,सत साँई स्वामी,आप भी सुनो। इसमें से चैतन्य हंस जो जीव था,वो संभालकर आप में मिला लो और उसका संभाल करो। ||४||

सब जीवाँ की राम || रछया तुम कीजीयो ||
अगन दाग को दोस || हमे मत दीजियो ||५||

अग्नि दाग के कारण कई जीवों को हानी पहुँचती है ऐसी हानी उन्हें न पहुँचने देते उनकी रक्षा करने की बिनती और अग्नि दाग का दोष हमे नहीं लगे ऐसी प्रार्थना रामजी से करनी चाहिए। ||५||

पाँच तत्त के माँय || आप ही आप हो ||
के सुखदेव तुम राम || तुमे ही जाप हो ||६||

हे रामजी,पाँच तत्व में आपही आप हो और जहाँ देखे जहाँ आपका ही जाप है याने आपकी ही सत्ता है इसलिए रामजी आप अग्नीदाग का दोष हमे न देते और जीव को गर्भ मे न डालते सुख के देश में मिला लेवे यही आपसे हम सभी की प्रार्थना है। |||६||

३४८

|| पदराग भेरू (प्रभाती) ||

संतो भाई सुणज्यो भेद बिचारा

संतो भाई सुणज्यो भेद बिचारा || करू न्याव सब सारा || टेर ||

संतो भाई,आप लोग अन्त समय का भेद और विचार सुनो याने अन्त समय में,क्या करने से,क्या होता है,उसका भेद और विचार,मैं तुम्हें बता रहा हूँ,उसे सुनो। इसका में सभी न्याय करता हूँ,उसे सुनिये। ||टेर||

हरष उछाव बेद धुन होई || अरथ उचार सुणावे ||
अंतकाळ मे आ बिध होई || ब्रम्हा का गण आवे || १ ||

अंतकाल में वेद धुन के साथ हर्ष उत्सव मनाते है। वेद की साखी,श्लोक पढते,गाते ऐसा वेदमय वातावरण बनाते। इसप्रकार अंतकाल में विधि करते तो हंस को ले जाने ब्रम्हा का गण आता है और वह गण हंस को ब्रम्हा के सतलोक ले जाता है। ||१||

हरजस ताळ मरदंग बाजे || बटे प्रसाद सवाया ||
अंत समे जो आ बिध होवे || लिछमी वर गण धाया || २ ||

अंतकाल मे विष्णु के किर्तन करते है,मृदंग,ताल बजाते है,प्रसाद बाटते है ऐसे नवविद्या करते है तो हंस को ले जाने लक्ष्मी का पती विष्णु के गण आते है। वह हंस को विष्णु के बैकुंठ मे ले जाते है। ||२||

हरक कोड़ सोग नही रंग रागा || सिव सिव बचन सुणावे ||
हंसा चले आ बिध होई || संकर का गण आवे || ३ ||

अंतिम समय पर ब्रम्हा के समान आनंद उत्सव नहीं या यम के समान रोना पिटा आदि दु:ख नहीं मनाते,या विष्णु के समान मृदंग,ताल बजाके रंग राग नहीं करते और शिव के देश की विधियाँ करते,सिव सिव वचन सुनाते जहाँ यह विधि होगी तो हंस को ले जाने शंकर का गण आता वह गण हंस को शंकर के कैलास ले जाता। ||३||

रोवा पिटो सोग सांसो || सोच करे नर नारी ||
हंस बिछुटत आ बिध होवे || तो जमराय सुं यारी || ४ ||

अंतिम में हंस बिछड्ते समय पर स्त्री-पुरुष मरनेवाले के पिछे रोते पिटते और मरनेवाले की फिक्र करते ऐसे ऐसे अनेक विधियों से दु:ख मनाते तो हंस को ले जाने यमराज अपना गण यमदुत भेजते और वे यमदुत हंस को मारते,ठोकते,नाना कष्ट देते,जुलुम करते,नरक के दु:ख भोगवाने यमपुरी ले जाते। इसप्रकार हंस का यमराज से प्रसंग पड्ता। ||४||

जे कोई हंस मोख कुं चाले || जां असी बिध भाया ||
देव डूंडी अनहद बाजा || घुरे निसाण सवाया || ५ ||

परममोक्ष में जानेवाले हंस का जब अंतसमय आता तब देवताओंके सभी लोको में मोक्ष जानेवाले संत के आगमन की अनेक प्रकार के सुनने में कभी नहीं आती ऐसी विधियाँ जैसे अनहद,मधुर बाजे बजा बजाके,शुभ समाचार की डूंडी(दंवडी)पुरे देवताओंके लोको में देते,यह शुभ समाचार सुनकर वहाँ के देवता हर्षित होते और उस आनंद में अपना पेट ढोल के समान बजाते,मुख से एक से बढकर एक घनघोर सुरीली,मिठे आवाज करते, सिटीयाँ बजाते ऐसी विधि स्वर्गादिक लोको में जब होती तब समझना हंस को लेने परमात्मा का पार्षद बावन गादी के अमर विमान के साथ मृत्युलोक में आया है और हंस को अमर लोक ले जा रहा है। ।।५।।

जेसी राग भाख जो नाखे ।। सोइ चालवाँ आवे ।।
के सुखराम देव सब दाणुं ।। बिध सुणे ऊठ ध्यावे ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अंतिम समय पर जो विधि करते,जो राग करते वैसे वैसे गण हंस को लेने आते। स्वर्गादिक की विधियाँ करोंगे स्वर्ग के राग गावोगे ,ज्ञान भाखोगे तो स्वर्ग के गण लेने आएँगे और नरकादिक की जमराग याने रोने की विधि करोगे, चिंता,फिकीर दु:ख की विधियाँ भाखोगे तो यमराक्षस उठकर हंस को यमपुरी लेने दौड्ते आएगा। ।।६।।

३८१

।। पदराग मंगल ।।

।। सुच्च धरणी अपसुच्च ।।

सुच्च धरणी अप सुच्च ।। तेज ही सुच्च हे ।।
जां भेंटयां मळ मेल ।। सबेही मुच्च हे ।।१।।

कर्तार पवित्र है और कर्तार ने बनाए हुए सभी धरती,जल,अग्नि,पवन,आकाश ये पाँचो तत्व पवित्र है। इनसे याने पृथ्वी,पानी,अग्नि,से भेट होनेपर याने जाकर मिलनेपर मल और मैल सभी मुच्च याने नाश होता है। ।।१।।

सुच्च पवन आकास ।। सुच्च करतार हे ।।
हर हर केहे द्यो दाग ।। दोष सब टार हे ।।२।।

और पवन भी पवित्र है और आकाश भी पवित्र है तथा कर्तार भी सुच्च याने पवित्र है। ऐसा कहकर मुख से हर हर कहते हुए मुर्दे की चिता के चारो ओर आग लेकर घुमो और आग लगाओ। मुर्दो को अग्नीदाग देते समय,उसका नाम लेकर या जो रिश्ता होगा वही बोलते हुए हाक मारकर लोग रोते है,तो यह एकदम बंद करके हर हर बोलते हुए अग्नि लगाओ। हर हर कहते हुए अग्नीदाग देने से होनेवाले सभी दोष मिटकर टल जाते है। ।।२।।

धरणी सूं अस्तुत ।। बिणती कीजीये ।।
रथी चिणी सिर तोय ।। दोस मति दीजीये ।।३।।

अग्नीदाग देने के लिए धरती की स्तुती तथा धरती की बिनती करनी चाहिए। यह तुम्हारे सिर के उपर रथी याने चिता की हमने रचना की है,उसका दोष हमे मत दो। ।।३।।

देव दुग छळ छिद्र ।। दूर सब जावज्यो ।।

के सुखदेव तम राम ।। किरपा कर आवज्यो ।।४।।

जानेवाले हंस को दु:ख मे घेरनेवाले मोगा,पित्तर समान देवता,राक्षस,छ्ल,छिद्र आदि सभी को अग्नीदाग के जगह से दूर जाने को कहना और सुख देनेवाले रामजी को अग्नीदाग के जगह पधारने की बिनती करना ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।४।।

३८८

|| पदराग मंगल ||

|| सुणज्यो सब नर नार ||

सुणज्यो सब नर नार ।। भजन सो कीजिये ।।

हंस चल्यो घर आद ।। बोळावो दीजीये ।।१।।

सभी स्त्री-पुरुष सुनो,हंस देह छोड्कर महासुख के आद घर जाता है तब कुटुंब परिवार के सभी सदस्यो ने संत के शरीर को सुगंधित जल से स्नानादिक कराकर सुशोभित वस्त्र और गहने पहनाकर बिदाई देनी चाहिए और रामनाम का भजन करना चाहिए। ।।१।।

कर बेकूटी खूब ।। माहे पधराई ये ।।

प्रदिखणा प्रणाम ।। हरि जस गाईये ।।२।।

शरीर को बैठाने के लिए बढिया बैकुटी सजानी चाहिए। बैकुटी में शरीर को बिराजमान करने के बाद जानेवाले संत से भक्ति मे कम पोहोचवाले हंसों ने प्रणाम करना चाहिए और प्रदक्षिणा देनी चाहिए और हरीयश का गायन करना चाहिए। ।।२।।

अगर चंनण कूं लाय ।। तिलक सो कीजिये ।।

केसर आण गुलाल ।। छाँटणा दीजिये ।।३।।

अगर और चंदन से संत के शरीर को तिलक और छापे लगाना चाहिए और संत के शरीर पर केसर और गुलाल के छाटणे छिड्कने चाहिए। ।।३।।

फऱ्याँ चिरांकां जोय ।। बाजा सो बजावणा ।।

कर नाटक बोहो भाँत ।। मेल लग जावणा ।।४।।

गाँव मे तथा जिस रास्ते से बैकुटी ले जाना है उस रास्ते को पताका,झंड्या,झिलमिल झिलमिल करनेवाले छोटे बल्बों से सजाना चाहिए और राम धुन के साथ मधुर बाजे बजाते ले जाना चाहिए। इस प्रकार के अनेक आनंद देनेवाले नाटक करते हुए दग्धक्रिया के जगह पहुँचना चाहिए। ।।४।।

याँ बातां करतार ।। बोत सुख पावसी ।।

हँसा के गुण होय ।। तुमे जस आवसी ।।५।।

ऐसी आनंद की बातें मनाने से जिस कर्तार परमात्मा ने हंस को मनुष्य देह दिया था वह

कर्तार परमात्मा बहुत खुश होता है। उसके खुश होने से हंस को विशेष सुखों का लाभ होता है और बैकुटी उत्सव मनानेवाले सभी नर–नारीयों को भाग मे लाये नहीं ऐसे अनेक सुखों का लाभ होता है। ।।५।।

धिन नर नारी गाँव ।। रोज ज्यां बीसरे ।।
धिन नर जाँके हो लार ।। बेकुटी नीसरे ।।६।।

संत के पिछे जिस कुटुंब परिवार में रोना धोना होता नहीं,रोना भुल जाते ऐसे कुटुंब के सभी सदस्य धन्य है,धन्य है तथा जिस गाँव में संत के पिछे रोना धोना होता नहीं वह गाँव भी धन्य है,धन्य है। जिस संत के जाने के पश्चात बैकुटी निकलती वह संत स्त्री हो या पुरुष धन्य है,धन्य है। ।।६।।

जुग मे बाताँ दोय ।। असुभ सुभ जाणिये ।।
के सुखदेव आ चाल ।। असल सत्त ठाणिये ।।७।।

जगत में शुभ और अशुभ इसप्रकार की अंतसमय की दो विधियाँ चलती। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिस विधि से जानेवाले संत को,उसके कुटुंब परिवारवालो को,उसके रिश्तेदारो को,उसके गाँववालो को सुख मिलते है वह विधि उच्च है,सत है और अस्सल है वह चाल करनी चाहिए तथा जिस विधि से जानेवाले हंस को, उसके कुटुंब परिवार को,उसके रिश्तेदारो को,उसके गाँववालो को दु:ख पड्ता है वह विधि निच है,दु:ख देनेवाली है,यह चाल त्यागनी चाहिए,यह समझो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारी को कहते है। ।।७।।